jkT; 'kS{kd vuqla/kku vkSj izf'k{k.k ifj"kn
NRrhlx<+

jkT; Lrjh; vkdyu

विश्लेषण आधारित

प्रशिक्षण माड्यूल

सत्र – 2019–20

सामाजिक विज्ञान

मार्गदर्शक

पी. दयानंद (IAS)
संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, छ.ग., शंकरनगर, रायपुर

डॉ. सुनीता जैन
अतिरिक्त संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, छ.ग., शंकरनगर, रायपुर

आकलन प्रभारी

अनुपमा नलगुंडवार

विशेष सहयोग

के.पी.एम.जी., इंडिया

समन्वयक

डॉ. विद्यावती चंद्राकर, डेकेश्वर प्रसाद वर्मा

सामग्री निर्माण

दिव्या लकरा, विद्या डांगे, प्रीति देशपाण्डे, कांति यादव,
नवीन जायसवाल, गिरधारी लाल चक्रधारी, शिशिरकना भट्टाचार्य

तकनीकी सहयोग

आई संध्यारानी, संतोष कुमार तंबोली, कुशाग्र चौबे, दिवाकर निमजे

आवरण पृष्ठ
सुधीर कुमार वैष्णव

ले–आउट
कुन्दन लाल साहू

टंकण
घनश्याम कुमार पटेल

आमुख

सामाजिक विज्ञान में समाज के विविध सरोकार समाहित हैं। इसमें इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि विषयों की विस्तृत सामग्रियाँ सम्मिलित होती है। एक अर्थपूर्ण सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या में पाठ्यसामग्री के चयन द्वारा विद्यार्थियों में समाज की समालोचनात्मक जानकारी विकसित करने में सहायक होती है। यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। नए आयामों और सरोकारों को समाहित किए जाने की भी अनेक संभावनाएँ है। सामाजिक विज्ञान का महत्व एक विश्लेषणात्मक और रचनात्मक मस्तिष्क की नींव तैयार करने के लिए अनिवार्य है।

आम तौर पर सामाजिक विज्ञान को रटने वाला विषय माना जाता है तथा ऐसा माना जाता है कि इस विषय के शिक्षकों हेतु प्रशिक्षण की आवश्यकता उतनी नहीं है जितनी गणित, विज्ञान के लिए होती है। किंतु अन्य विषयों के समान सामाजिक विज्ञान विषय भी महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि वर्तमान में प्रतियोगी परीक्षाओं की प्रतिस्पर्धा के कारण सामाजिक विज्ञान को एक उपयोगी विषय समझा जाता हैं। हमें यह पहचानने की आवश्यकता है कि सामाजिक विज्ञान में विज्ञान की ही तरह वैज्ञानिक दृष्टिकोण होता है। सामाजिक विज्ञान द्वारा अपनाई गई पद्धतियाँ विशिष्ट होती है। यह विषय किसी भी रूप में अन्य विषयों से कम नहीं है।

यह आवश्यक हो गया है कि प्रत्येक बच्चे के नजरिये से शिक्षा व्यवस्था का विश्लेषण किया जाय, इस विश्लेषण से उपजे परिणाम विकास का रास्ता तय करने में हमारी मदद करेंगे। इस दिशा में सार्थक प्रयास भी किए जा रहे हैं। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सामाजिक विज्ञान विषय के मॉड्यूल का निर्माण किया गया है। इस मॉड्यूल में बच्चों की समझ को बेहतर बनाने के लिए कक्षावार इतिहास/ भूगोल/नागरिकशास्त्र विषय की पाठयोजनाएँ एवं सुझावात्मक गतिविधियाँ दी गई हैं, जिससे बच्चों में सामाजिक विषयों पर विवेचनात्मक चिंतन को बढ़ावा दिया जा सके तथा ज्ञान प्राप्ती में बिना किसी दबाव के विद्यार्थियों और शिक्षकों की भागीदारी हो। शिक्षकों हेतु विषयवस्तु के अध्यापन की प्रस्तावित गतिविधियाँ व विद्यार्थियों की सहज सहभागिता के लिए माड्यूल को रोचक व आनंददायी बनाया गया है ताकि अपेक्षित कौशलों को प्राप्त किया जा सके।

इसी क्रम में यह शैक्षिक सामग्री आपको सौंपी जा रही है विश्वास है कि बच्चों में विभिन्न कुशलताओं के विकास करने में यह सामग्री आपको सहयोग प्रदान करेगी।

दिसम्बर 2019

रायपुर

पी.दयानंद IAS
संचालक
एस.सी.ई.आर.टी.,छ.ग.

सामाजिक विज्ञान – प्रशिक्षण फ्रेमवर्क

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृ. क्र.
सामाजिक विज्ञान का आशय एवं उद्देश्य	1-2
प्रथम दिवस : • पंजीयन एवं परिचय सत्र • सामाजिक विज्ञान का आशय, उद्देश्य, अपेक्षाएं • Ice breaker **हम और हमारा सामाजिक परिवेश** • सीखने के प्रतिफल • रुब्रिक्स क्या है? • आदर्श पाठ योजना • TDM	3-24
द्वितीय दिवस : • Ice breaker – परस्पर निर्भरता • आकलन • आदर्श पाठयोजना • शैक्षिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग	25-33
तृतीय दिवस : • Ice breaker देखो और बताओं • सामाजिक विज्ञान की कक्षागत पैडागॉजी • आदर्श पाठयोजना	34-42
चतुर्थ दिवस : • Ice breaker – शैक्षिण अंत्याक्षरी • उपचारात्मक शिक्षण क्या है? • उपचारात्मक शिक्षण हेतु गतिविधि	43-46
पंचम दिवस : • Ice breaker अपना साथी खोजो • पाठयोजना क्या है? • गतिविधियाँ	47-69
उत्तरमाला	70-71
संदर्भ ग्रंथ व परिशिष्ट	72-76

सामाजिक विज्ञान

सामाजिक विज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना है सामाज + विज्ञान अर्थात समाज में घटित प्रत्येक घटना चाहे वह प्राकृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक हो उसका वैज्ञानिक तरीकों से चिंतन करना है। कुछ घटनाओं का मानव जीवन पर तात्कालिक प्रभाव पड़ता है जिसे हम प्राकृतिक घटना कहते हैं, जैसे– भूकंप, ज्वालामुखी, भूस्खलन, बाढ़ आदि। कुछ घटनाएँ सामाजिक होती है जिस पर समाज में प्रचलित रीति रिवाजों का प्रभाव पड़ता हैं। इन घटनाओं का मानव जीवन पर दीर्धकालीक प्रभाव पड़ता है इन सामाजिक घटनाओं को राजनैतिक एवं आर्थिक तत्व भी प्रभावित करते हैं।

सामाजिक विज्ञान का उद्देश्य अपने आसपास में होने वाली विभिन्न घटनाओं को विस्तार से समझना तथा समीक्षात्मक जांच कर उस पर प्रश्न करते हुए विद्यार्थियों में आलोचनात्मक जागरूकता का संवर्धन करना है। समाज के प्रति समालोचनात्मक समझ का विकास करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु केवल सूचनाएँ देने एवं परीक्षा पास करने के तथ्यों का अंबार लगाए जाने के बजाय अवधारणाओं की समझ और सामाजिक राजनीतिक यथार्थ के विश्लेषण की क्षमता का विकास करना है न कि बिना व्याख्या के तथ्यों को रटने पर बल देना। सामाजिक विज्ञान का दायित्व विद्यार्थियों में स्वतंत्रता, विश्वास, परस्पर सम्मान और विविधता के प्रति आदर जैसे मानवीय मूल्यों का सुदृढ आधार तैयार करना तथा राष्ट्रीय दृष्टिकोण एवं स्थानीय दृष्टिकोण में संतुलन बनाना।

सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य

1. अपने आसपास में होने वाली विभिन्न घटनाओं को विस्तार से समझना।
2. बच्चों में करूणा, सहानुभूति, विश्वास, शांति, सहयोग, सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण जैसे मानवीय मूल्यों के प्रति संवेदना जगाना ।
3. विविध मतों, जीवन शैलियों और सांस्कृतिक रीति रिवाजों का सम्मान करना।
4. ग्रहण किए गए विचारों और परंपराओं के संबंध में प्रश्न करना और उसकी जांच पड़ताल करना।
5. जेंडर संवेदनशीलता तथा सामाजिक वर्गो और हर प्रकार की असमानताओं के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाना।
6. परिकल्पनाओं की जाँच के तरीके सोच पाने और उन तरीकों को काम में लेने के लिए आवश्यक दक्षताओं का विकास करना।
7. निष्कर्ष निकालने की क्षमता व समालोचनात्मक चिन्तन का विकास करना।
8. निष्कर्षो के व्यावहारिक परिणामों को समझ पाने की क्षमता का विकास करना।
9. सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों की समालोचनात्मक समझ का विकास करना।
10. इतिहास, बोध–संबंधी क्षमताओं का विकास करना।
11. भौगोलिक परिस्थितियों एवं इसका मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों की समझ का विकास करना।

पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाएँ

यह आशा की जाती है कि कक्षा–8 के अंत तक बच्चे निम्नलिखित पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाओं को पूरा करने में समर्थ हो –

- उन तरीकों को पहचानना जिनके द्वारा राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक मुद्दे उनके दैनिक जीवन को समय–समय पर प्रभावित करते हैं।
- पृथ्वी को मानव तथा जीवों के एक आवास के रूप में समझना।
- अपने स्वयं के क्षेत्र से परिचित होना तथा विभिन्न प्रदेशों (स्थानीय से लकर भूमंडलीय) की पारस्परिक निर्भरता को समझना।
- संसाधनों के स्थानीय वितरण तथा उनके संरक्षण को समझना।
- भारतीय इतिहास के विभिन्न कालों के ऐतिहासिक विकास को समझना। विभिन्न प्रकार के स्रोतों से इतिहासकार अतीत का अध्ययन कैसे करते है– इसे समझना।
- एक स्थान/क्षेत्र के विकास का दूसरे से संबंध स्थापित करते हुए ऐतिहासिक विविधता को समझना।
- भारतीय संविधान के मूल्यों और दैनिक जीवन में उनके महत्व को आत्मसात् करना।
- भारतीय लोकतंत्र और उनकी संस्थानों एवं संघीय, प्रांतीय तथा स्थानीय स्तर की प्रक्रियाओं के प्रति समझ विकसित करना।
- परिवार, बाजार और सरकार जैसी संस्थानों की सामाजिक, आर्थिक भूमिका से परिचित होना।
- राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरण प्रक्रियाओं में समाज के विभिन्न वर्गों के योगदान को पहचानना।

Day - 1

पंजीयन एवं परिचय सत्र

Ice breaker

हम और हमारा सामाजिक परिवेश

उद्देश्य

- सामाजिक विज्ञान के प्रति रूचि विकसित करना।
- सामाजिक विज्ञान की विषय वस्तु व विभिन्न आयामों से परिचित कराना।

आवश्यक सामग्री – पेपर स्लिप्स

कक्षा को समूहों में बाँटने के लिये इस गतिविधि का उपयोग किया जा सकता है। शिक्षक बहुत सारे कागज के स्लिपस् तैयार करेंगे जिसमें भूगोल, इतिहास, नागरिक शास्त्र एवं अर्थशास्त्र से संबंधित कुछ आयाम/शब्दों उल्लेख किया गया हो। तत्पश्चात् सभी कागज के टुकड़ो को मिला दिया जायेगा। कक्षा में सभी प्रतिभागी स्लिप उठाकर पढ़ेंगे एंव निर्णय करेंगे कि उन्हें किस समूह में बैठना होगा।

कैसे करें ...

आर्थिक	भौगोलिक	ऐतिहासिक	नागरिक शास्त्र
कर	कृषि	उपनिवेश	संविधान
बजट	मिट्टी का अपरदन	यूरोप का पुर्नजागरण	शोषण के विरूद्ध अधिकार
संपत्ति	खनिज	ईस्ट इंडिया	उच्च न्यायलय
जी.एस.टी.	झील	वेलेजली	पंचशील
आयकर	सतत् पोषणीय विकास	रैयतवाड़ी	यू.एन.ओ.
आमदनी	साल्ज़बर्ग	लोथल	जमींदारी प्रथा
उपभोक्ता	भूस्खलन	लीग	एफ.आई.आर.
मूल्यसंवर्धन	काजीरंगा	ब्रम्हसमाज	संसद

अब प्रत्येक प्रतिभागी को कहे कि आपके चिट में जो भी नाम है वह जिस समूह से संबंधित है। उस समूह में चले जाए। इस तरह प्रत्येक प्रतिभागी चिट अनुसार समूह में एकत्रित हो जाएंगे। प्रक्रिया पूर्ण होने के पश्चात् समूह के प्रतिभागी अपने–अपने स्लिप पढ़कर सुनायेंगे ताकि इस बात की जाँच हो सके कि वह सही समूह में बैठा है।

शिक्षक कथन – अपने समूह में उस क्षेत्र से संबंधित किसी एक विषय के सामाजिक महत्त्व पर आपस में चर्चा करें एवं कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करें कि आपका समूह मानव जीवन को किस प्रकार प्रभावित करता है।

योग्यता आधारित ढाँचा

सीखने के प्रतिफल को योग्यता के स्तर के साथ प्रतिचित्रित करना :

आमतौर पर हम पाठ्यपुस्तक को संपूर्ण पाठ्यक्रम मान कर पाठों के अंत में दिए गए प्रश्नों के आधार पर मूल्यांकन करते हैं। पाठ्य सामग्री के संदर्भों की भिन्नताओं तथा पढ़ाने के विभिन्न सिद्धांतों को ध्यान में नहीं रखा जाता है। इसके लिए हमें सीखने के प्रतिफलों की ओर बढ़ना होगा, जिससे हम निरंतर बच्चों की प्रगति का अवलोकन कर सकें।

सीखने के प्रतिफल :

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा सीखने के प्रतिफल को विकसित किया है जो पठन सामग्री को रटकर याद करने पर आधारित मूल्यांकन से समाप्त करने के लिए बनाए गए हैं। योग्यता (सीखने के प्रतिफल) आधारित मूल्यांकन पर जोर देकर, शिक्षकों और पूरी व्यवस्था को यह समझने में मदद की गई है कि बच्चे ज्ञान, कौशल और सामाजिक व्यक्तिगत गुणों और दृष्टिकोणों में परिवर्तन के मामले में पूरे वर्ष के दौरान एक विशेष कक्षा में क्या हासिल करेंगे। सीखने के प्रतिफल ज्ञान और कौशल से परिपूर्ण ऐसे कथन है जिन्हें बच्चों को एक विशेष कक्षा या पाठ्यक्रम के अंत तक प्राप्त करने की आवश्यकता है और यह अधिगम संवर्धन की उन शिक्षणशास्त्रीय विधियों से समर्थित हैं जिनका क्रियान्वयन शिक्षकों द्वारा करने की आवश्यकता है। ये कथन प्रक्रिया आधारित हैं और समग्र विकास के पैमाने पर बच्चे की प्रगति का आकलन करने के लिए गुणात्मक या मात्रात्मक दोनों तरीकें से जाँच योग्य बिन्दु प्रदान करते हैं। सीखने के प्रतिफल सभी बच्चों, जिनमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (सी.डब्ल्यू.एस.एन) भी शामिल हैं, की शिक्षण शास्त्रीय प्रक्रियाओं और पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाओं से जुड़े हैं।

विशेषताएँ –

1. लर्निंग आउटकम्स कक्षा 1 से 8 तक विषयवार पृथक–पृथक है।
2. यह राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के सिद्धांतों पर आधारित हैं।
3. इनमें कौशलों पर विशेष फोकस किया गया है।
4. इसे पुस्तक की चारदीवारी में बांधा नहीं गया है। संबंधित लाभार्थी पाठ्य पुस्तक से परे जाकर भी अवधारणा स्पष्ट कर सकते हैं।
5. लर्निंग आउटकम्स में ज्ञानात्मक पक्ष के साथ–साथ भावानात्मक एवं मोटर स्किल को भी समाहित किया गया है।
6. एक लर्निंग आउटकम कई पाठों में तथा एक पाठ में कई लर्निंग आउटकम्स समाहित होते हैं इसके अतिरिक्त ये विभिन्न कक्षाओं में तथा विभिन्न विषयों में भी समाहित हो सकते हैं।
7. लर्निंग आउटकम को केंद्र में रखकर शैक्षणिक योजनाएं बनाई जाती है।

सीखने के प्रतिफल का दस्तावेज SCERT छत्तीसगढ़ के वेबसाइट scert.cg.gov.in एवं NCERT नई दिल्ली की वेबसाइट www.ncert.nic.in पर उपलब्ध है।

आइए महत्वपूर्ण बदलावों पर एक नजर डालते हैं :

महत्वपूर्ण बदलाव

पहले

- शिक्षक केंद्रित, स्थिर डिज़ाइन
- शिक्षक का निर्देश और निर्णय
- शिक्षक का मार्गदर्शन और प्रबोधन
- निष्क्रिय भाव से सीखना
- चारदीवारी के अंदर सीखना
- ज्ञान ''प्रदत्त'' और स्थिर है
- अनुशासन केंद्रित
- रैखिक अनुभव
- मूल्यांकन, संक्षिप्त

वर्तमान में

- शिक्षार्थी केंद्रित, लचीली प्रक्रिया
- शिक्षार्थी की स्वायत्ता
- शिक्षार्थी को सहयोग द्वारा सीखने को प्रोत्साहन
- सीखने में सक्रिय भागीदारी
- विस्तृत सामाजिक संदर्भों में सीखना
- ज्ञान विकसित होता है, रचा जाता है
- बहु–अनुशासनात्मक शैक्षणिक दृष्टि
- बहुविध एवं विभिन्न अनुभव
- बहुविध, सतत्

योग्यता की रूपरेखा

आपने देखा ये महत्वपूर्ण परिवर्तन हैं जो यह मांग करते हैं कि हम भी परिवर्तन को स्वीकारें। अपनी बदलती भूमिका ज्ञान के स्रोत के बदले सुविधादाता के रूप में आपनी क्षमताओं का विकास करें। हम ऐसे अवसर रच पाए जिससे बच्चो में अन्तर्निहित क्षमताएँ बाहर आएँ और उनका विकास हो। हम पारंपरिक ढाँचे से योग्यता आधारित ढांचे की ओर कदम बढ़ाएं।

पारंपरिक ढाँचे से योग्यता आधारित ढाँचे की ओर जाने में महत्वपूर्ण परिवर्तन –

पारंपरिक ढांचा

1. मानकीकृत / Standardized:
   निर्देश पूरे वर्ग के लिए मानकीकृत है और सीखने के परिणामों को कक्षावार–नामित किया गया है।
2. सीखने का तरीका / Learning approach:
   शिक्षक केंद्रित।
3. वास्तविक जीवन में जुड़ाव नहीं / No real life application : केवल कुछ LOs वास्तविक दुनिया में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल को बढ़ावा दे सकते हैं।
4. अलग–अलग / Segregated : पाठ्यक्रम के अंशों का विभिन्न अंतरालों पर परीक्षण किया जाता है।

योग्यता आधारित ढांचा

1. अनुकूलित / Customized:
   निर्देश अलग–अलग सीखने के परिणामों के साथ छात्र की जरूरतों से मेल खाने के लिए अनुकूलित है।
2. सीखने का तरीका / Learning approach:
   विद्यार्थी केंद्रित
3. वास्तविक जीवन से जुड़ाव / Real life application : 21वीं सदी के कौशल और वास्तविक दुनिया में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल के लिए तैयारी।
4. अनुपूरक / Complementary: फॉर्मेटिव आकलन योग्यतात्मक आकलन का पूरक होता है।

स्तर 1 से 4

स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3	स्तर 4
तथ्यों को याद करने की क्षमता (The ability to recall facts)	वैचारिक ज्ञान, या तथ्यों को संदर्भ में रखने की क्षमता। (Conceptual knowledge or context)	उपयुक्त रणनीति बनाने की सोच का उपयोग निर्णय लेने या तर्क में करना (Employing strategic thinking through the use reasoning or decision making.)	जानकारी को संश्लेषित करने या वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों में लागू करने के लिए विस्तारित सोच का उपयोग करना । (Using extended thinking to synthesize information or apply it to real world application.)

रूब्रिक्स क्या है?

रूब्रिक्स निर्देशों के क्रियान्वयन संबंधित कुछ ऐसे अवयव या कथन हैं जो आकलन हेतु निर्मित उपकरणों को स्वरूप देने के लिए आवश्यक है। इनके द्वारा प्राप्त प्रत्युत्तरों एवं अन्य सभी घटकों के द्वारा उपलब्धि के मापदंड को निर्धारित किया जा सकता है।

- रूब्रिक्स एक विशिष्ट कार्य पर विद्यार्थियों का आकलन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले मानदंडों का एक व्यापक समूह है।
- रूब्रिक्स कार्य के प्रदर्शन और आकलन के मानदंडों को रेखांकित करता है। यह शिक्षक और विद्यार्थियों दोनों द्वारा सहभागितापूर्ण तरीके से विकसित किया जाता है।
- रूब्रिक्स में लचीलापन और अनुकूलन की क्षमता होती है, जो किसी उपकरण को अधिक उपयुक्त बनाती है।
- जब रूब्रिक्स को सही तरीके से उपयोग किया जाता है, तो समय पर प्रतिक्रिया प्रदान करने, विद्यार्थियों को विस्तृत प्रतिक्रिया का उपयोग करने, महत्वपूर्ण सोच को प्रोत्साहित करने, शिक्षण विधियों को परिष्कृत करने और संप्रेषण में आसानी होती है।

उदाहरण के लिए किसी विषय पर प्रश्न तैयार करना। इस गतिविधि का आकलन चार बिन्दुओं पर रूब्रिक्स का उपयोग करके किया जा सकता है।

मानदंड / कार्य / गतिविधि / लर्निंग आउटकम्स्	स्तर–1	स्तर–2	स्तर–3	स्तर–4
प्रश्न तैयार करना	साथियों की मदद से प्रश्न तैयार करना।	स्वयं नये प्रश्न तैयार करना, शिक्षक, साथियों की मदद से अंतिम रूप देना।	स्वयं प्रश्न तैयार कर लेना।	स्वयं स्वतंत्र रूप से प्रश्न तैयार करना एवं दूसरों को तैयार करने में मदद करना।

इस तरह सीखने के प्रतिफलों की प्राप्ति को रूब्रिक्स के अनुसार तय मापदंडों में से मापा जा सकता है। इसके लिए स्तर (Level) 1, 2, 3, 4 निर्धारित किए गए है। यहाँ यह उल्लेख करना उचित होगा कि विषयवार–कक्षावार अध्यायवार रूब्रिक्स तैयार किए गए है।

Learning outcomes mapped to competency level (सीखने के प्रतिफल)

कक्षा–छठवीं
विषय– नागरिक शास्त्र

क्र.	अध्याय	उप विषय	लर्निंग आउटकम्स	स्तर 1 याद करना, स्मरण करना, खोजना, लेबल लगाना वर्णन करना	स्तर 2 समझना, व्याख्या कर पाना, संक्षेप करना, सुमेलित करना	स्तर 3 लागू करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, ड्रा करना, गणना करना	स्तर 4 मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, सृजन करना, वर्गीकरण करना
				पाठ के उपरांत विद्यार्थी कर सकेंगे			
1.	मानचित्र	दूरी, दिशा, प्रतीक	607	मानचित्रों के प्रकारों को समझता हैं।	मानचित्र के घटक, दिशा, दूरी संकेत को समझता है।	दूरी, दिशा प्रतीक के आधार पर अपनी/घर का रेखाचित्र बनाता है।	दूरी, दिशा और प्रतीक के आधार पर किसी भी स्थान के मानचित्र का वर्णन करता है।

DEMO LESSON using competency level framework

विषय – भूगोल

कक्षा – छठवी

अध्याय 4 – मानचित्र

LOs – SST 607 – अपने आसपास का मानचित्र बनाते है और उस पर मापक दिशाएँ तथा अन्य विशेषताओं को रुढ़ चिन्हों की सहायता से दिखाते हैं।

स्तर – 1 छत्तीसगढ़ के मानचित्र में अपने जिले को पहचानते हैं।

स्तर – 2 चित्र, रेखाचित्र एवं मानचित्र में अंतर कर पाते हैं।

स्तर – 3 दूरी, दिशा प्रतीक के आधार पर अपने/घर का रेखाचित्र बनाता है तथा मापक की अवधारणा को समझ पाते हैं।

स्तर – 4 दूरी, दिशा और प्रतीक के आधार पर किसी भी स्थान के मानचित्र का वर्णन करते हैं।

Word List – संकेत, पैमाना ,दिशा

Teaching Learning Process - समूह कार्य, मानचित्र अवलोकन, चर्चा।

Previous knowledge – बच्चे छत्तीसगढ़ राज्य के मानचित्र को जानते है।

Teaching Aids – छत्तीसगढ़ का राजनैतिक मानचित्र, **DIKSHA App – K2VKB3 ()**

स्तर 1 – **छत्तीसगढ़ के मानचित्र में अपने जिले को पहचानते हैं।**

गतिविधि 1

मानचित्र देखकर बताओ

- आपके जिले का नाम क्या है? (Level 1)
- यह जिला किस दिशा में स्थित है? (Level 1)
- इससे उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम में कौन–कौन से जिले है? (Level 2)
- सुकमा किस दिशा में स्थित है? (Level 2)
- सुकमा जिले के उत्तर में कौन सी दिशा है? (Level 2)

शिक्षक कथन – मानचित्र में उत्तर दिशा हमेशा ऊपर ही होती है, दाहिनी ओर पूर्व दिशा, बॉयी ओर पश्चिम दिशा तथा नीचे दक्षिण दिशा होता है। **दिशायें हमेशा सापेक्ष होती है अर्थात् किसी भी स्थान की दिशा संदर्भ/स्थान पर निर्धारित होती है।** जैसे कि आपने बताया कि छत्तीसगढ़ के उत्तर में सरगुजा है तथा दक्षिण में सुकमा है सुकमा जिले के उत्तर में दंतेवाड़ा जिला है दंतेवाड़ा जिले के उत्तर में कोडागाँव जिला है।

मानचित्र

स्तर 2 – **चित्र, रेखाचित्र एवं मानचित्र में अंतर कर पाता है।**

गतिविधि 2

घर से स्कूल आते समय का चित्र बनाओं और उन स्थानों को भी दर्शाओं जो आपको रास्ते के दोनों ओर दिखाई देते हैं।

गतिविधि 3

दिए गए चित्र, रेखाचित्र और मानचित्र को देखकर बताओं कि इनमें क्या अंतर है?

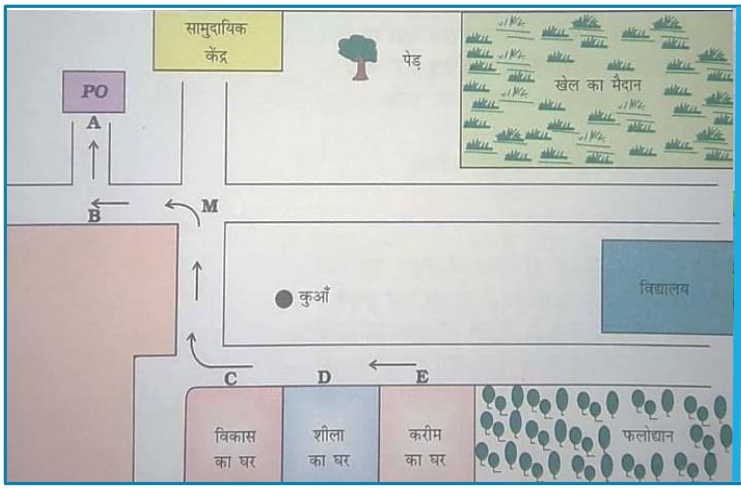

रेखाचित्र	चित्र	मानचित्र
अंदाज से बनाए गए चित्र को रेखा चित्र कहते हैं। जैसे कि आपने घर से स्कूल आते समय का चित्र अंदाज से बनाया।	चित्र किसी भी वस्तु की हूबहु आकृति होती हैं यह त्रिआयामी होता है।	धरालत की आकृतियों जैसे– पर्वत, पठार, मैदान, नदी, सड़कमार्ग, रेलमार्ग आदि को निर्धारित दिशा में उचित पैमाने /मापक द्वारा दर्शाया जाता है इसे मानचित्र कहते है।

आकलन – ऊपर दिए गए रेखाचित्र 'ब' का अवलोकन कर बताए कि –

- विकास, शीला, करीम का घर किस दिशा में है? (Level 2)
- विद्यालय किस दिशा में है? (Level 2)
- करीम के घर के बाँए ओर क्या है? (Level 1)

शिक्षक कथन – किसी भी मानचित्र पर वास्तविक आकार एवं प्रकार में विभिन्न आकृतियों जैसे भवनों, सड़कों, पुलों, वृक्षों, रेल की पटरियों, नदियों व जलाशयों को दिखाना संभव नहीं होता है इसलिए इन्हें निश्चित अक्षरों, छायाओं, रेखाओं, चित्रों के उपयोग करके दर्शाया जाता हैं ये प्रतीक कम स्थान में अधिक जानकारी प्रदान करते हैं मानचित्रों की एक विश्वव्यापी भाषा होती है जिसे सभी आसानी से समझ सकते है प्रतीकों के उपयोग के सबंध में एक अंतर्राष्ट्रीय सहमति हैं। मानचित्रों में भू–आकृतियों के लिए विभिन्न रंगो का उपयोग किया जाता है जेसे पर्वतों के लिए भूरा पठारों के लिए पीला समुद्र एवं नदियों के लिए नीला, मैदानों के लिए हरा रंग।

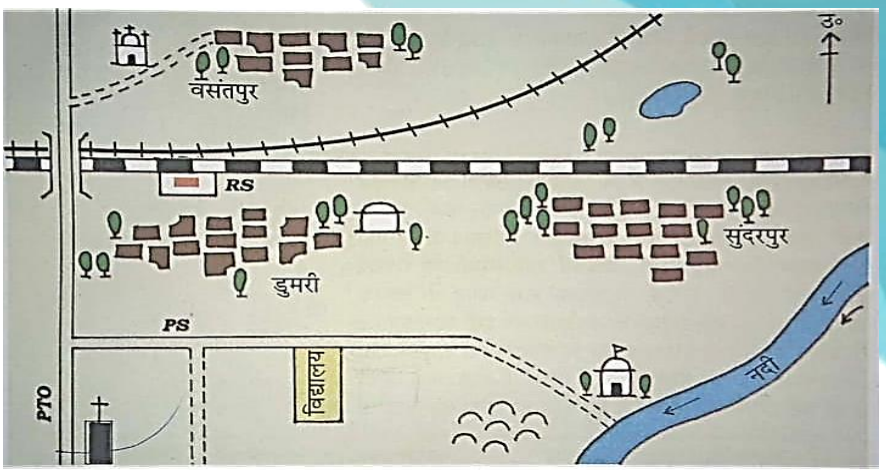

स्तर 3 – **दूरी, दिशा प्रतीक के आधार पर अपने/घर का रेखाचित्र बनाता हैतथा मापक की अवधारणा को समझ पाता है।**

गतिविधि 4

मापक – समूह कार्य – कक्षा में उपस्थित बच्चों की संख्या के आधार पर समूह बनाए। प्रत्येक समूह में कम से कम 5–5 विद्यार्थी हो।

अपनी कक्षा का अवलोकन कर रेखाचित्र बनाओ। रेखाचित्र में दिशाओं तथा कमरे की विभिन्न वस्तुओं के लिए संकेत चिन्ह भी बनाओ। अब प्रत्येक समूह का 1 सदस्य कमरे की लम्बाई, चौड़ाई को अपने कदमों से नापेगा समूह के अन्य सदस्य कदमों को गिनेगें और दी गई तालिका में भरेंगे। फिर उसी कमरे की लम्बाई, चौड़ाई की मीटर टेप/स्केल से नापकर दी गई तालिका भरेंगे और तालिका का तुलनात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष निकालेगें। (Level 3)

समूह	कमरे की लम्बाई चौड़ाई (कदमों में)		कमरे की लम्बाई चौड़ाई, (से.मी. में)	
	लम्बाई	चौड़ाई	लम्बाई	चौड़ाई
क्रमांक 1				
क्रमांक 2				
क्रमांक 3				

दोनों प्रकार की नाप में अंतर क्यों आया

मापक क्या है?

शिक्षक कथन – किसी भी स्थान की दूरी को मानक इकाई में ही नापा जाता है। दूरी की इकाई है सेंटीमीटर, मीटर, किलोमीटर, मानचित्र में किसी भी स्थान की दूरी को निश्चित पैमाने/मापक के आधार पर सेंटीमीटर में दर्शाया जाता। मानचित्र में दूरी दर्शाने हेतु मापक/पैमाने का उपयोग किया जाता है।

पृथ्वी के धरातल पर वास्तविक दूरी और मानचित्र पर दिखाई गई उसी दूरी में अनुपात को मापक/ पैमाना कहते है।

उदाहरण – मान लो आपके कक्षा की लम्बाई 30 मीटर है। उसे मानचित्र में दिखाना है तो हमें एक ऐसा पैमाना चुनना होगा जिससे हमारा मानचित्र न बहुत बड़ा बनें और न ही बहुत छोटा। अतः हमारा मापक होगा 1 से.मी. = 5 मीटर अर्थात् कागज की 1 से.मी. की दूरी धरातल के 5 मीटर को दर्शाती है। अतः धरातल की 30 मीटर की दूरी को कागज पर 30/5 = 6 से.मी. से दर्शाया जाएगा। (Level 4)

यदि हम कक्षा की 30 मीटर लंबाई के लिए 1 से.मी. = 1 मीटर लेंगे
या 1 से.मी. = बराबर 10 मीटर लेंगे तो क्या होगा?

स्तर 4 – दूरी, दिशा और प्रतीक के आधार पर किसी भी स्थान के मानचित्र का वर्णन करता है।

शिक्षक कथन – प्रत्येक मानचित्र के नीचे में पैमाना दिया होता है। यदि हमें पैमाना मालूम है हम मानचित्र पर किन्हीं दो स्थानों के बीच दूरी की गणना कर सकते है। हर मानचित्र का पैमाना अलग–अलग हो सकता है। किसी मानचित्र में 1 से.मी. बराबर 100 कि.मी. माना जाता है। तो किसी में यह 50 या 500 किलोमीटर भी हो सकता है। इस तरह पैमाने के द्वारा हम किसी क्षेत्र को छोटा या बड़ा मानचित्र बना सकते है।

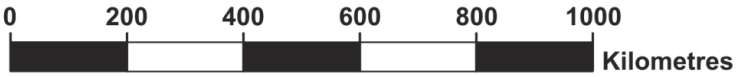

गतिविधि 5 – मानचित्र पर दो स्थानों के बीच की निकटतम दूरी मापने के लिए धागे का एक टुकड़ा लीजिए। मानचित्र में किसी दो स्थानों को धागे से नापों। हम धागे की लम्बाई को स्केल से नापकर मानचित्र में दिए गए मापक के अनुसार वास्तविक दूरी ज्ञात करो।

उदाहरण – भारत के राजनैतिक मानचित्र में रायपुर से दिल्ली की दूरी को धागे से नापा। नापे गए धागे को स्केल से मापने पर धागे की लंबाई 12 सेंटीमीटर ज्ञात हुई। मानचित्र में पैमाना 1:10,00,000 दिया है। (अर्थात 1 कि.मी.) अतः रायपुर से दिल्ली की दूरी 1200 किलोमीटर होगी।

आकलन – भारत के मानचित्र का अवलोकन कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो –

भारत के उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम में कौन – कौन से राज्य है तालिका भरो –

दिशा	राज्यों के नाम
उत्तर	
दक्षिण	
पूर्व	
पश्चिम	

दिए गए नामों के लिए रुढ़ चिन्ह बनाओ–
नदी, रेलमार्ग, किसी भी राज्य की राजधानी, अन्तर्राज्यीय सीमा रेखा ।

Recapitulation - मानचित्र पठन हेतु दिशा, पैमाना, संकेत जानना बहुत ही आवश्यक हैं मानचित्र में उत्तर दिशा हमेशा ऊपर होती है। मानचित्र में दिए गए संकेत सदैव सार्वभौमिक होते हैं। मानचित्र में किसी भी दो स्थानों की वास्तविक दूरी जानने के लिए पैमाना दिया होता है।

Assignment - मानचित्र में दिए गए मापक के अनुसार किसी भी दो स्थानों की दूरी नापकर वास्तविक दूरी ज्ञात करो।

Task Distribution Matrix- TDM (Blue Print)

आकलन की तैयारी के लिए प्रश्नों का निर्माण एक आवश्यक प्रक्रिया है जिससे विद्यार्थी की दक्षताओं का पता चले। आइए देखे कि ब्लूप्रिंट या TDM में क्या–क्या सूचनाएँ/जानकारी निहित होती है।

- कक्षा विषय
- पाठ्य सामग्री
- विभिन्न शैक्षिक/योग्यताओं पर प्रश्न के विवरण जैसे स्तर Level से 1 – 4
- प्रश्नों के प्रकार जैसे अतिलघु उत्तरीय, लघु उत्तरीय, दीर्घ उत्तरीय आदि।
- प्रसंग/संदर्भ : Personal, Social, Scientific, Occupation
- अनुक्रिया के प्रकार जैसे – (i) Selected (चयन), (ii) Constructed (रचना)

हम कह सकते है TDM एक ऐसा ढाँचा या फ्रेमवर्क है जो पाठ्यसामग्री (Syllabus) के प्रत्येक प्रश्नों के स्तरों, संदर्भों एवं प्रतिक्रिया के प्रकारों को बताता है।

यहाँ प्रतिक्रिया के प्रकार को थोड़ा विस्तार दिया जा सकता है –

1. चयनित (Selected) - इसके अंतर्गत बच्चों को उत्तरों के चुनाव करने होते है जैसे – (i) बहुविकल्पीय प्रश्न (ii) रिक्त स्थान भरें (iii) सही गलत उत्तर का चुनाव करें।

2. निर्माण (Constructed) - इसके अंतर्गत प्रश्नों के उत्तर बच्चों को स्वयं निर्मित करने होते है, जैसे – अति लघुउत्तरीय प्रश्न, लघुउत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

संदर्भ – वास्तविक जीवन की परिस्थितियाँ जिनके आधार पर प्रश्न तैयार किए जाते है।

1. व्यक्तिगत (Personal) – स्वयं परिवार, समूह की गतिविधियाँ, भोजन, खरीददारी, खेल, स्वास्थ्य, व्यक्तिगत समय प्रबंधन, व्यक्तिगत राय।
2. व्यावसायिक (Occupational) – खोज, आविष्कार, विश्लेषण, संश्लेषण, व्यवसाय से संबंधित कार्य एवं निर्णय।
3. सामाजिक (Social) – परिवार, समुदाय एवं शासन में भागीदारी करना। संस्कृति की समझ।
4. वैज्ञानिक (Scientific)– अनुप्रयोग, विज्ञान और प्रौद्योगिक से संबंधित विषय। जैसे– मौसम या जलवायु, पारिस्थितिकी, चिकित्सा, अंतरिक्ष विज्ञान, आनुवांशिकी। (मॉड्यूल के अंत में कक्षावार **TDM** संलग्न है अवलोकन किया जा सकता है।

TDM – SST – Class 6

		Competency Lever योग्यता विस्तार				Content प्रसंग/संदर्भ				Response Type अनुक्रिया प्रकार		Type of Questions प्रश्नों के प्रकार			
	Lo tagged	I	II	III	IV					Selected	Constucted	VSA-1 Marks	SA-2 Marks	LA-3 Marks	VLA-5 Marks
History (Q-05) Marks- 12 (-30%)	613, 618, 610, 612 618	01	02	01	01					02	03	02	01	01	01
Civics(Q.05) Marks -11- (27.50%)	623,619, 624, 625 ,623	01	02	01	01					01	04	01	02	02	00
Geography(Q.07) Marks- 17- (42.50)	602, 602, ,605 607, 601, 603, 604	02	01	02	02					02	05	02	02	02	01
Total Qs-17		04	05	04	04					**5**	**12**	**5**	**5**	**5**	**2**
Total Marks		07	13	09	11										
Question Wise %		23. 53	29.41	23.53	23.53										
Marks Wise %		17.50	32.50	22.50	27.50										

विषय कोड | 8 | 0 | 8 | 1 |

राज्य स्तरीय आकलन (SA-1)

सत्र 2019–20

कक्षा – 8

विषय – सामाजिक विज्ञान

हिन्दी माध्यम

समय – 02:30 घंटे

पूर्णांक – 40

परीक्षार्थी आई डी

परीक्षार्थी का नाम ..... शाला का नाम .....

प्राप्तांक (अंकों में) (शब्दों में) .....

हस्ताक्षर प्रधान पाठक ..... हस्ताक्षर निरीक्षक .....

केवल मूल्यांकन हेतु										
PAPER CODE										
STUDENT CODE										

1		10		केन्द्राध्यक्ष हस्ताक्षर एवं सील	हस्ताक्षर मूल्यांकनकर्ता
2		11			
3		12			
4		13			
5		14			
6		15			
7		16			
8		17		दिनांक:	दिनांक:
9					
कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained)					

निर्देश :–

1. सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।
2. दिये गये प्रश्नों के उत्तर इसी प्रश्न पत्र में ही हल कीजिए।

सही विकल्प चुनकर लिखिए – (1 X 5 = 5 अंक)

प्रश्न 1. यह चित्र निम्नलिखित को दर्शाता है।

अ. अनवीकरणीय ब. नवीकरणीय
स. खनन प्रक्रिया द. संरक्षण प्रक्रिया

उत्तर– .....

प्रश्न 2. उपनिवेशीय शासन के दौरान भारतीय हथकरघा उद्योग के पतन के क्या कारण थे?

अ. मशीनों द्वारा निर्मित वस्तुओं का ब्रिटेन से आयात करना
ब. भारत द्वारा ब्रिटेन को कम कीमत पर वस्तुओं का निर्यात करना
स. भारत से ब्रिटेन को निर्यात किए जाने वाले कच्चे माल की नीतियाँ
द. भारतीय उच्च वर्ग द्वारा पश्चिमी जीवन शैली को अपनाना

उत्तर– .....

प्रश्न 3. क्रिकेट खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर को राष्ट्रपति द्वारा संसद के किस सदन के लिए मनोनित किया गया ?

अ. लोक सभा ब. विधान सभा
स. राज्य सभा द. विधान परिषद

उत्तर– .....

प्रश्न 4. ''सुनहरा रेशा'' से अभिप्राय है–

अ. चाय ब. कपास
स. पटसन द. नारियल जटा

उत्तर– .....

प्रश्न 5."बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ" योजना प्राचीन भारत के किस कुरीतियों का अंत करता है?

अ. बाल विवाह　　ब. दहेज प्रथा

स. बहु विवाह　　द. कन्या वध

उत्तर– .....

निर्देश : प्रश्न क्रमांक 6 से 10 तक अति लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। (2 X 5 = 10 अंक)

प्रश्न 6. यदि आपके शरीर को कोई आपत्तिजनक तरीके से छूता है, तो आप क्या करेंगे?

उत्तर– .....

.....

.....

.....

प्रश्न 7. चित्र में दिए गए मृदा विन्यास को नामांकित कीजिए।

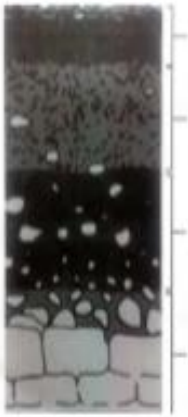

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 8. "उपनिवेशवाद" के किन्ही दो परिणाम लिखिए ?

उत्तर– .....

.....

.....

.....

प्रश्न 9. एफ.आई. आर. क्या है?

उत्तर– .....

.....

.....

.....

प्रश्न 10. मिलेट फसलें किसे कहते हैं? इन फसलों के नाम लिखिए।

उत्तर– .....

.....

.....

.....

निर्देशः–प्रश्न क्र. 11 से 15 तक लघु उत्तरीय प्रश्न है। (3 X 5 = 15 अंक)

प्रश्न 11. कारखानों की स्थापना से समाज में क्या बदलाव हुआ? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तरः– .....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 12. नीचे दिए गए चित्रों को देखकर कर बताइए कि ये किस मौलिक अधिकार से संबंधित हैं? मौलिक अधिकारों का एक–एक उदाहरण दीजिए (कोई तीन)

(1)

(2)

(3)

(4)

(5)

(6)

उत्तर– .....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 13.

देश	भूमि उपयोग के अनुसार क्षेत्रफल का प्रतिशत			
	फसल भूमि	चारागाह	वन	अन्य उपयोग
आस्ट्रिया	6	56	14	24
ब्राजील	9	20	66	5
कनाडा	5	4	39	52
चीन	10	34	14	42
फ्रांस	35	21	27	17
भारत	57	4	22	17

ऊपर दी गई सारणी का अवलोकन कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

I. किस देश में फसल भूमि क्षेत्र सबसे कम है?
II. भारत में कौन सा क्षेत्र है जहाँ भूमि का उपयोग सबसे अधिक किया जाता है ?
III. ऐसे कौन– कौन से देश हैं जहाँ वनों का क्षेत्र 33 प्रतिशत से अधिक हैं?

अथवा

जल विद्युत से होने वाली लाभ व हानियों को लिखिए।

उत्तरः– .....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 14. राष्ट्रपति की किन्हीं तीन शक्तियों का वर्णन किजिए।

उत्तरः– .....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 15. भारतीय समाज में **'पुनर्विवाह'** के लिए क्या–क्या प्रयास किए गए ?

उत्तरः– .....

.....

.....

.....

.....

निर्देशः– प्रश्न क्र. 16 से 17 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न है। (5 X 2 = 10 अंक)

प्रश्न 16. औसतन एक भारतीय नागरिक प्रतिदिन लगभग 150 लीटर जल का उपयोग करता है, नीचे दी गई तालिका का अवलोकन करते हुए बताइये कि किन–किन क्षेत्रों में पानी की खपत सबसे अधिक है? पानी की खपत को कम करने के लिए आप क्या करेंगे?

उपयोग	लीटर प्रति व्यक्ति/प्रतिदिन
पानी पीना	3 प्रतिशत
शौचालय	40 प्रतिशत
खाना बनाना	4 प्रतिशत
वस्त्र धोना	35 प्रतिशत
नहाना	20 प्रतिशत
बागवानी	25 प्रतिशत
अन्य कार्य	23 प्रतिशत
योग	**150 लीटर**

अथवा

ऊर्जा के गैर परंपरागत स्रोतों के नाम लिखकर उनसे होने वाले लाभ और हानि को लिखिए?

उत्तरः– .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 17. दिए गए समाज सुधारकों को पहचान कर उनके द्वारा किए गए सामाजिक कार्यों का उल्लेख कीजिए–

क्र.	चित्र	नाम	किए गए सामाजिक कार्य
1			
2			
3			
4	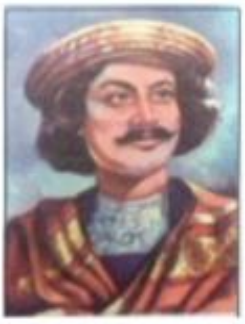		

प्रश्न पत्र का अवलोकन कर TDM के आधार पर दक्षता स्तर की जाँच करें।

Bottom performing LO's of SST

प्रस्तुत मॉड्यूल में विद्यार्थियों के सामाजिक विज्ञान में कम उपलब्धि वाले सीखने के प्रतिफल है। चूंकि सामाजिक विज्ञान में इतिहास भूगोल एवं नागरिक शास्त्र (तीनों विषय) समाहित हैं अतः तीनों विषयों के कम उपलब्धि प्राप्त सीखने के प्रतिफल निम्नानुसार हैं।

(अ)	पाठ का शीर्षक	कक्षा	विषय	LOs क्रमांक व विवरण
1.	पंचायतीराज	6वीं	नागरिक शास्त्र	624– सरकार विभिन्न स्तरों– स्थानीय, प्रांतीय और संघीय, को पहचानते हैं।
2.	मानचित्र	6वीं	भूगोल	607– अपने आसपास का मानचित्र बनाते है और उस पर मापक दिशाएँ तथा अन्य विशेषताओं को रुढ़ चिन्हों की सहायता से दिखाते हैं।
3.	जीवन में आया बदलाव	7वीं	इतिहास	720– उन कारको का विश्लेषण करते हैं जिससे नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों (भक्ति/सूफी) का उदभव हुआ।
4.	कृषि	8वीं	भूगोल	808– विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि के प्रकारों तथा विकास से संबंध स्थापित करते है, ऐसे कारकों का विश्लेषण करते हैं जिनके कारण कुछ देश प्रमुख फसलों जैसे –गेहूँ, चावल, कपास, जूट इत्यादि का उत्पादन करते है। बच्चे इन देशों को विश्व के मानचित्र पर अंकित करते है।
(ब)	गतिविधियाँ	कक्षा	विषय	LOs क्रमांक व विवरण
1	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	6वीं	नागरिक शास्त्र	624 – सरकार के विभिन्न स्तरों–स्थानीय, प्रांतीय, संघीय को पहचानते हैं।
2	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	6वीं	इतिहास	618– प्राचीन काल के विभिन्न धर्मों और विचारों के मूल तत्वों और मूल्यों का विश्लेषण करते हैं।

3	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	6वीं	भूगोल	620 – अपने आस–पास मानवीय विविधताओं के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करते हैं।
4	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	7वीं	इतिहास	720– उन कारको का विश्लेषण करते हैं जिससे नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों (भक्ति/सूफी) का उदभव हुआ।
5	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	7वीं	नागरिक शास्त्र	730– विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान को उपयुक्त उदाहरणों के साथ वर्णित करते है।
6	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	7वीं	भूगोल	710– प्राकृतिक संसाधनों, जैसे – वायु, जल, ऊर्जा, पादप एवं जंतुओं के संरक्षण के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं।
7	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	8वीं	नागरिक शास्त्र	823 – अंतरिम सरकार की स्थापना से लेकर भारतीय संविधान के निर्माण की विभिन्न प्रक्रियाओं को क्रमबद्ध रूप में जानता है।
8	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	8वी	भूगोल	808 – ऐसे कारकों को विश्लेषण करते है जिनके कारण कुछ देश प्रमुख फसलों जैसे–गेहूं, चावल, कपास, जूट इत्यादि का उत्पादन करते हैं। बच्चे इन देशों को विश्व के मानचित्र में अंकित करते हैं।
9	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	8वीं	इतिहास	821 - 1870 के दशक से आजादी तक में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की रूपरेखा बताता है।

Day - 2

Ice breaker

परस्पर निर्भरता

उद्देश्य :

1. स्वमूल्यांकन व स्वयं की भूमिका समझने का अवसर प्रदान करना।

2. प्रतिभागियों में परस्पर निर्भरता की भावना विकास करना।

3. विभिन्न व्यवसाय/क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्ति के प्रति परस्पर सम्मान का भाव विकसित करना।

4. सामाजिक विविधता को समझने का अवसर प्रदान करना।

कार्यविधि – प्रतिभागियों के संख्या के आधार पर समूह निर्माण करना तथा प्रत्येक समूह को अलग–अलग प्रकार की भूमिका में विचार व्यक्त करने कहा जाए, इस हेतु विभिन्न प्रकार की चिट तैयार की जायेगी जैसे – **मजदूर, डॉक्टर का व्यवसाय, शिक्षक का कार्य, पेड़ पौधे, कल कारखाने, नदी, कृषक, जंगल जानवर, पानी..** आदि। प्रत्येक समूह का एक व्यक्ति चिट उठायेगा और उस पर सभी सदस्य मिलकर चिट पर लिखे विषय अनुसार अपनी भूमिका समझायेंगे। अंत में सभी समूहों के प्रस्तुतीकरण के उपरांत निष्कर्ष या सुझाव दिए जा सकते है।

जैसे – मैं एक मजदूर हूँ। सड़क निर्माण के काम में मै सहयोग करता हूँ। मै अपन काम को पूरी जिम्मेदारी के साथ करता हूँ ताकि मेरे साथ काम करने वाले अन्य साथियों के लिए आगे का कार्य आसान हो जाये। जब मेरे काम से समाज और देश को लाभ होता है तो मुझे बहुत खुशी होती है। इसी प्रकार प्रतिभागी अपनी चिट के अनुसार अपनी भूमिका प्रस्तुत करेंगे।

- उपरोक्त गतिविधि के आयोजन से प्रतिभागियों में अभिव्यक्ति की क्षमता को विकसित करने में मदद मिलेगी।
- प्रतिभागियों को विभिन्न व्यवसाय आपस में किस प्रकार से परस्पर जुड़े है इसे समझने का अवसर मिलेगा।

आकलन

सामाजिक अध्ययन विषय के अंतर्गत बच्चों के विकास की निरंतर जानकारी के लिए सतत् एवं नियमित आकलन करना जरूरी है। जिसमें विभिन्न विधियों एवं उपकरणों के माध्यम से बच्चों का आकलन किया जाता है।

रचनात्मक आकलन

रचनात्मक आकलन, कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है, जो सतत् रूप से औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों में किया जाता है। कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बच्चों को सीखने–सिखानें के पर्याप्त अवसर दिए जाते हैं जिससे बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण कर सकें। बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं गतिविधियों के माध्यम से, अपने अनुभव एवं गलतियों के निरंतर सुधार से करते है। सीखने सिखाने की इस प्रक्रिया में शिक्षक को यह जानना बहुत आवश्यक है कि **बच्चे कितना सीख रहे हैं, सीखने की प्रगति कैसी है, बच्चे को कहाँ मदद की आवश्यकता है?** अतः शिक्षक कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान विभिन्न उपकरणों के माध्यम से बच्चे का सतत् आकलन करता है, आकलन के दौरान शिक्षक न सिर्फ आवश्यकतानुसार बच्चे का उपचारात्मक शिक्षण करता है बल्कि अपने स्वयं की भी शिक्षण प्रक्रिया में सुधार करता है।

शिक्षक अपने स्वयं के फीडबेक हेतु, माता–पिता फीडबेक देने एवं बच्चों की प्रगति जानने के लिए फॉरमेटिव आकलन के कुछ बिंदुओं को मूल्यांकन पंजी में नोट करता है।

सावधिक आकलन

इस आकलन से पता चलता है कि प्रत्येक बच्चे ने निश्चित अवधि में क्या सीखा? कहाँ उन्हें सहायता की जरूरत है। इस आधार पर शिक्षक अपनी शिक्षण योजना तैयार करते है अर्थात् इस आकलन में निश्चित अवधि में बच्चों की उपलब्धियाँ और कमजोरियाँा लगने के साथ–साथ शिक्षक भी प्रभाविता का भी पता चलता है।

योगात्मक आकलन

योगात्मक आकलन प्रत्येक सेमेस्टर, इकाई या पाठ के अंत में किया जाता है। यह आकलन पेपर पेंसिल (लिखित) उपकरण की सहायता से निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर किया जाता है। जिसके लिए प्रश्न पत्र का उपयोग किया जाता है। शिक्षक प्रश्न बनाते समय इस बात का ध्यान रखें कि प्रश्न–पत्र कौशल आधारित हो, रटने पर आधारित न हो, तथा बच्चों के अनुभव, कल्पना–शक्ति, सृजनशीलता, तर्क करने, स्वतंत्र विचारों को रखने के लिए अवसर प्रदान करता हो। प्रश्न बनाते समय प्रश्नों के शैक्षिक उद्देश्यों को भी ध्यान में रखा जाए अर्थात प्रश्न ज्ञान, अवबोध, कौशल एवं अनुप्रयोग पर आधारित हो जिसमें वस्तुनिष्ठ, अति लघुउत्तरीय, लघुउत्तरीय, दीर्घउत्तरीय प्रकार के प्रश्न शामिल हो सकते हैं। आकलन के उपकरण : मौखिक प्रश्न, अवलोकन, पोर्टफोलियों, सर्वे, प्रोजेक्ट कार्य, समूह कार्य, लिखित कार्य, स्व मूल्यांकन।

छत्तीसगढ़ राज्य के समस्त स्कूलों में कक्षा 1 से 8 तक विद्यार्थियों के लिए सत्र में दो बार आकलन की प्रक्रिया अपनायी जा रही है।

उच्च प्राथमिक स्तर पर पूर्णांक प्रति सेमेस्टर 75–75 अंक का हैं जिसका विवरण निम्नानुसार है –

1. फॉरमेटिव आकलन – 10 अंक
2. सावधिक आकलन – 25 अंक
3. समेटिव आकलन – 40 अंक

आइए हम यहाँ आकलन की कुछ चर्चा कर लें :

प्रकार	कब	उद्देश्य
रचनात्मक	यह शिक्षण के दौरान निरंतर किया जाता है।	• सीखने में सुधार • शिक्षण प्रक्रिया में सुधार
सावधिक और योगात्मक	निश्चित अवधि, किसी इकाई, पाठ या निश्चित पाठ्यक्रम के पूर्ण शिक्षण उपरांत। स्कूल कैलेण्डर के अनुसार या सत्र के अंत में।	• ग्रेडिंग • कक्षोन्नति

एफ.ए. और एस.ए. – विशेषताओं को क्रमबद्ध करना

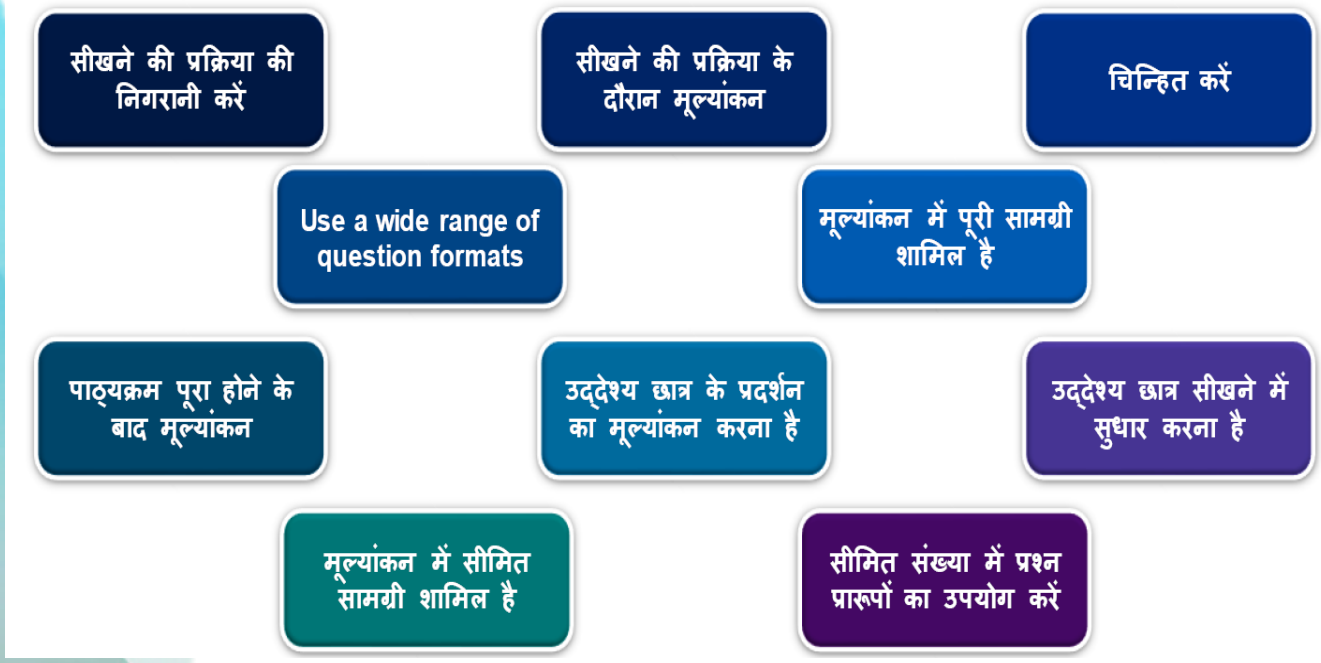

एफ.ए. और एस.ए. गुण निर्दिष्ट करना

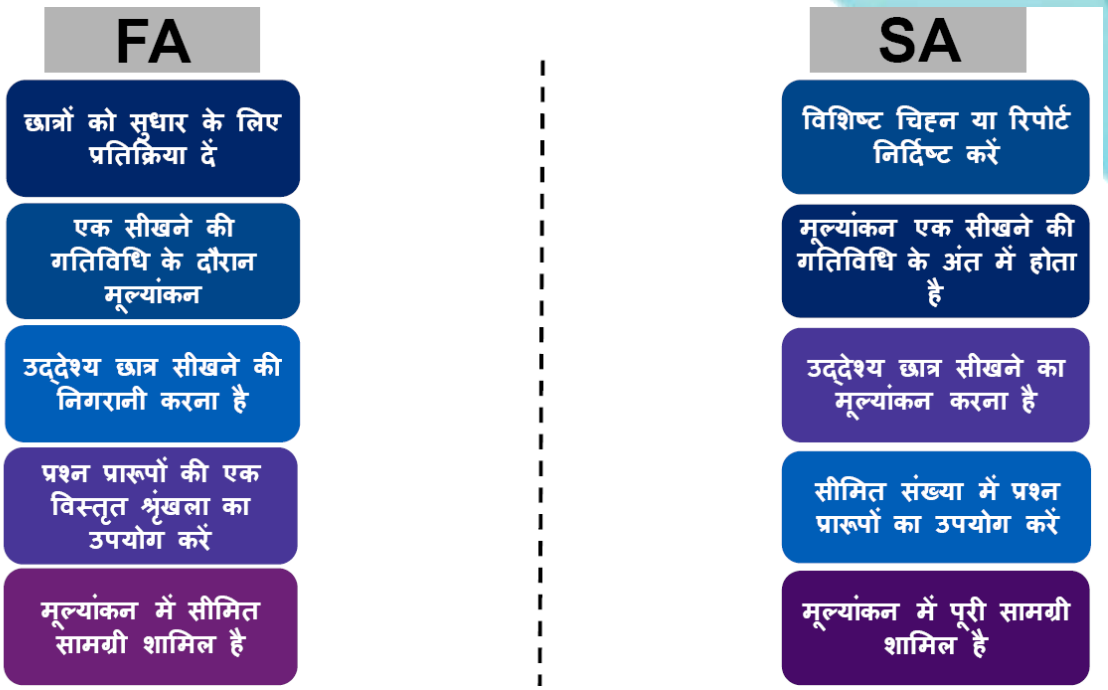

रूब्रिक्स एवं एफ.ए. आधारित प्रादर्श पाठ योजना

क्र.	अध्याय	उप–विषय	लर्निंग आउट कम्स	स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3	स्तर 4
पाठ के आधार पर छात्र कर सकेंगे				याद करना, स्मरण करना, खोजना, लेबल लगाना वर्णन करना	समझना, व्याख्या कर पाना, संक्षेप करना, सुमेलित करना	लागू करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, ड्रा करना, गणना करना	मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, सृजन करना, वर्गीकरण करना
1.	पंचायती राज		623	त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था को जान पाता है।	चुनाव की प्रक्रिया को समझता है।	ग्राम सभा की बैठक में व्यक्तियों की भागीदारी के महत्व को समझता है।	आम नागरिकों द्वारा दिये जाने वाले करों की उपयोगिता का विश्लेषण करता है।

एफ.ए. आधारित प्रादर्श पाठ योजना

कक्षा – छठवी

अध्याय – पंचायती राज

LOs – SST624 – सरकार के विभिन्न स्तरों–स्थानीय/प्रांतीय संघीय को पहचानते है।

स्तर – 1 **चुनाव की प्रक्रिया को समझते है तथा** वार्ड के बारे में जानते है

स्तर – 2 वार्ड के प्रतिनिधि के चुनाव की प्रक्रिया को समझ पाते हैं।

स्तर – 3 सरपंच व उसके कार्यों को समझकर अपने दैनिक जीवन को सहज बना पाते है।

स्तर – 4 पंच/सरपंच व उपसरपंच के कार्यों का विश्लेषण कर पाते है।

Word List – वार्ड, पंच, ग्राम पंचायत

Teaching Learning Process - चर्चा सह रोल प्ले।

Teaching Aids – DIKSHA App – ISID26

Previous knowledge –

- विद्यार्थी अपने ग्राम से परिचित है।
- विद्यार्थी अपने ग्राम के पंच/सरपंच के कुछ कार्यों से परिचित है।

Linking content –

शिक्षक विद्यार्थियों से कक्षा मानिटर के बारे में चर्चा करेंगे।

चर्चा के बिंदु	संभावित उत्तर
1. आप किस कक्षा में पढ़ते हैं?	हम लोग कक्षा 6 में पढ़ते हैं।
2. आपकी कक्षा का मॉनिटर कौन हैं?	हमारी कक्षा की **मॉनिटर** हर्षा है।
3. आपकी कक्षा के मॉनिटर को किसने चुना?	हमारी कक्षा की **मॉनिटर** को हमारी कक्षा के सभी विद्यार्थियों ने मिलकर चुना।
4. आपकी कक्षा के मॉनिटर को 7 या 8वीं कक्षा के विद्यार्थियों ने क्यों नहीं चुना?	7वी, 8वी के बच्चों ने हमारे **मॉनिटर** का चुनाव नहीं किया क्योंकि वे हमारी कक्षा के विद्यार्थी नहीं है।

शिक्षक – आइए आज हम रोल प्ले के माध्यम से चुनाव प्रक्रिया को समझते है।

स्तर – 1 चुनाव की प्रक्रिया को समझते है तथा वार्ड के बारे में जानते हैं।

गतिविधि 1

निर्देश – शिक्षक विद्यार्थियों को मॉनिटर के चुनाव की प्रक्रिया करवाएँ।

- मॉनिटर हेतु 2–3 विद्यार्थियों के नाम प्रस्तावित करें।
- नामांकन फार्म भरवाये।
- उन्हें अलग–अलग चुनाव आबंटित करें।
- मतदान हेतु कक्षा में व्यवस्था करें एवं मतदान अधिकारियों को नियुक्त करें।
- मतदान करवाये इस हेतु एक बाक्स तैयार कर उम्मीदवारों के चुनाव चिन्ह की चिट बनाकर कक्षा के सभी बच्चों से मतदान करवाये।
- मतदान हेतु बाएं हाथ की अनामिका में स्याही लगवाये।
- सभी विद्यार्थियों के मतदान उपरांत मतों की गणना करवा कर, अधिक मत प्राप्त विद्यार्थी को मॉनिटर हेतु आमंत्रित करें।

स्तर – 2 वार्ड के प्रतिनिधि के चुनाव की प्रक्रिया को समझ पाते है।

शिक्षक कथन – मॉनिटर की चुनाव की तरह ही वार्ड का चुनाव होता है। प्रत्येक ग्राम पंचायत के इलाके को जनसंख्या के आधार पर कई वार्डो में बांटा जाता है प्रत्येक पंचायत में 10–20 वार्ड होते है। ठीक उसी तरह जिस तरह आपकी शाला में कक्षा 6वीं को **A B C** कक्षाओं में बांटा गया है।

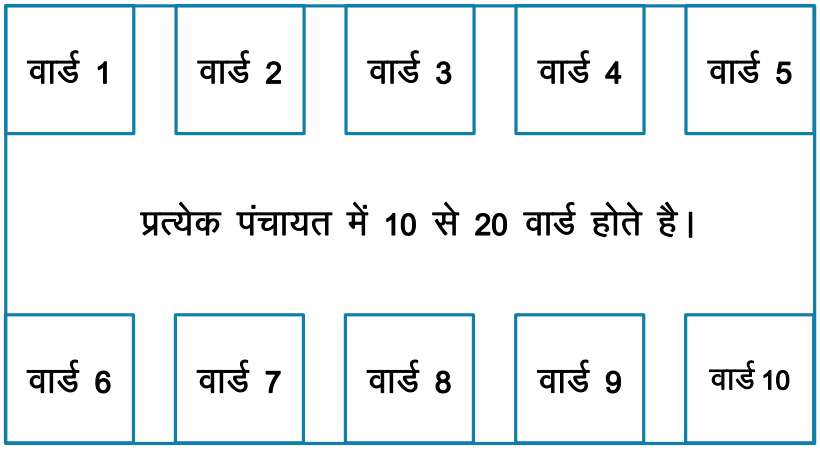

प्रत्येक वार्ड से एक पंच चुना जाता है, पंच के चुनाव हेतु जो व्यक्ति खड़ा होता है उसे उम्मीद्वार कहते है। उम्मीद्वार की आयु 21 वर्ष या उससे अधिक हो तथा उसका नाम उस वार्ड के मतदाता सूची में होना चाहिए। यदि किसी वार्ड में एक ही उम्मीद्वार होता है तो उसका निर्विरोध चुनाव कर लिया जाता हैं। एक से अधिक उम्मीद्वार होने पर मतदान किया जाता है। वार्ड के वे लोग जिनकी आयु 18 वर्ष से अधिक हो तथा जिनका नाम मतदाता सूची में हो वे वोट देते हैं। जिस उम्मीद्वार को ज्यादा वोट मिलते है वह पंच बनता है।

आइए इस गतिविधि से वार्ड और पंच के चुनाव को समझे –

गतिविधि 2

निर्देश – शिक्षक पूरी कक्षा को 4–5 समूह में बांट दे, ये वार्ड होंगे। प्रत्येक समूह (वार्ड) से पृथक–पृथक 2–3 बच्चों को अलग– अलग पार्टी के उम्मीद्वार बनाये तथा वोट की प्रक्रिया करवाएं। ध्यान रहे कि बच्चे जिस समूह (वार्ड) के सदस्य है उन्हीं समूह(वार्ड) के उम्मीद्वार को वोट देंगे। मतदान हेतु मतपेटी निर्मित कर मतों को मतपेटी में डालने को कहें। मतदान संपन्न होने पर, मतों की गणना भी बच्चों से करवाएं तथा प्रत्येक समूह (वार्ड) के उम्मीद्वार जिसे अधिक मत मिलेंगे वह विजयी होगा एवं पंच बनेगा। इस तरह पूरी कक्षा से 3–4 पंच चुन कर आएगें। ठीक इसी तरह चुनाव की प्रक्रिया होती है।

स्तर – 3 **सरपंच व उसके कार्यों को समझकर अपने दैनिक जीवन को सुगम बना पाते है।**

शिक्षक – अब हम सरपंच के चुनाव और उसके कार्यों को जानते है। क्या आप बता सकते है कि सरंपच कहाँ का मुखिया होता है?

विद्यार्थी – सरपंच ही पंचायत का मुखिया होता है।

शिक्षक – पंचों की तरह सरंपच को भी सभी लोग वोट डालकर चुनते है। फर्क यह है कि पंच को सिर्फ एक वार्ड के लोग चुनते है, जबकि सरंपच को पूरे ग्राम पंचायत के मतदाता चुनते हैं तथा सभी पंच मिलकर अपने में से एक उपसरपंच चुनते है।

स्तर – 4 **पंच/सरपंच व उपसरपंच के कार्यों का विश्लेषण कर पाते है।**

सरपंच के कार्य

प्रश्न – सरपंच के मुख्य कार्य क्या–क्या है?

विद्यार्थी – गाँव के विकास का काम करवाना।

शिक्षक कथन –

1. सरपंच पंचायत का मुखिया होता है।
2. सरपंच की अध्यक्षता में पंचों की बैठक लेना।
3. ग्राम सभा का आयोजन करना।
4. विकास के कार्यों की निगरानी करना।
5. पंचायत को प्राप्त राशि का व्यय व हिसाब किताब करना।

प्रश्न – ग्राम पंचायत के कौन–कौन से कार्य है?

- गाँव की साफ–सफाई करवाना।
- पेयजल एवं निस्तार के पानी की व्यवस्था करवाना।
- सड़क, पुलिया, शाला का निर्माण और मरम्मत करवाना।
- विवाह, जन्म–मृत्यु को दर्ज करना।
- गाँव में पाठशाला एवं स्वास्थ्य सेवा की निगरानी करना।
- गाँव के विकास के लिए योजना बनाना एवं शासन द्वारा चलाए जा रहे योजनाओं के क्रियान्वयन में मदद करना।

Recapitulation -

शिक्षक – बच्चों, आज के कालखंड में की गई गतिविधि से आपने क्या समझा?

विद्यार्थी–

1. आज की गतिविधि से हमने वार्ड निर्धारण एवं पंच की चुनाव प्रक्रिया को समझा।
2. पंच के चुनाव हेतु उम्मीद्वार की योग्यता को समझा।
3. सरपंच का चुनाव और कार्यों की जानकारी हुई।
4. सरपंच गाँव का मुखिया होता है।
5. उप सरपंच को पंच, मिलकर अपने में से एक को उप सरपंच चुनते है।
6. ग्राम पंचायत – गाँव की साफ–सफाई, पेयजल व निस्तार के पानी की व्यवस्था, विवाह, जन्म–मृत्यु को दर्ज करवाना, गाँव में पाठशाला एवं स्वास्थ्य सेवा की निगरानी आदि के कार्य करती है।

Assignment -

1. सरपंच का चुनाव किस प्रकार होता है?
2. उप सरपंच का चुनाव कैसे होता है?
3. ग्राम पंचायत के महत्वपूर्ण कार्य कौन–कौन से है?
4. आप अपने ग्राम का अवलोकन कर जानकारी ले कि आपके ग्राम में विकास कार्य किस प्रकार चल रहा है?

प्रभावी शिक्षण के लिए आईसीटी का उपयोग

आज के तकनीकी युग में अपने अधिगम को सरल बनाने में अपने चारों ओर वातावरण में उपलब्ध विभिन्न आईसीटी माध्यम जैसे इंटरनेट, क्यूआर कोड आदि का छात्र आसानी से उपयोग कर सकता है।

तकनीकी का उपयोग क्यों :–

- तकनीकी के प्रयोग से ज्ञान को समृद्ध और सुगम बनाया जा सकता है।
- यह एक महत्वपूर्ण अधिगम माध्यम है जिसका उपयोग कक्षा कक्ष में अथवा बाहर कहीं भी और कभी भी किया जा सकता हैं।
- सामाजिक विज्ञान के अभ्यास के लिए पाठ्यपुस्तक में दी गई सामग्री के अतिरिक्त अन्य सामग्री उपलब्ध होती है।
- एक ही अवधारणा पर आधारित भिन्न–भिन्न प्रश्न उपलब्ध होने के कारण विषय वस्तु के प्रति रूझान विकसित करने में मदद होती है।
- सामाजिक विज्ञान की कई अमूर्त अवधारणाओं का मूर्त रूप में प्रदर्शन रहता है जिससे अधिगम आसान होता है।
- H.O.T. प्रश्नों के लिए भी विद्यार्थी जिज्ञासु बनता है।
- तकनीकी का अध्यापन में प्रयोग विद्यार्थी को नई सोच के लिए प्रेरित करता है और जिज्ञासु भी बनाता है।

आईसीटी के उपयोग से लाभः–

- **क्यूआर कोड /दीक्षा ऐप–**

शिक्षको और विद्यार्थियो में दक्षता संवर्धन हेतु पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने के दृष्टि से **"दीक्षा एप"** एक अभिनव प्रयास है। जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। इसका प्रमुख उद्देश्य पाठ्य वस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास प्रश्न संदर्भ सामग्री के रूप में प्राप्त होते है।

https://diksha.gov.in/cg/

Day - 3

Ice breaker

देखो और बताओ

उद्देश्यः– अवलोकन की दक्षता का विकास करना

कार्यविधिः– एक ट्रेन में अलग–अलग प्रकार की वस्तुएं रखी जा जावेंगी। जैसे सुई, स्केल, बॉटल, पेन्चिस, ग्लोब, मानचित्र, चूड़ी के टुकड़े, चॉक, डस्टर, मोबाईल आदि 25–25 वस्तुएं रखी जावेंगी। फिर एक प्रतिभागी को बुलाकर कहा जायेगा कि ट्रेन में रखी वस्तुओं को ध्यान से देखकर (30 सेकंड का समय देकर) उसके बाद उसमें से कुछ वस्तुएं निकाल ली जायेगी और पूछा जायेगा कि इस ट्रेन में कौन सी वस्तुएं नहीं है उनके नाम बताओं। इस प्रकार अवलोकन की दक्षता की परख हेतु यह गतिविधि मददगार होगी।

सामाजिक विज्ञान की कक्षागत पैडागॉजी

विद्यालयीन शिक्षा में सामाजिक विज्ञान शिक्षण पर्यावरणीय शिक्षा के विस्तृत रुप में परिलक्षित होता है, जिसमें विशिष्ट दक्षताओं को समाहित करने हेतु परिवेशीय अध्ययन को भूगोल, इतिहास एवं नागरिक शास्त्र अथवा राजनीति शास्त्र तथा अर्थशास्त्र जैसे उपविषयों का सारगर्भित अध्ययन शामिल होता है। सामाजिक विज्ञान में प्राकृतिक विज्ञान और शारीरिक विज्ञान की तरह वैज्ञानिक दृष्टि होती है, सामाजिक विज्ञान के माध्यम से स्वतंत्रता, विश्वास, परस्पर सम्मान और विविधता के आदर जैसे मानवीय मूल्यों का सुदृढ़ आधार तैयार होता है। अतः अनुशासनात्मक चिन्तन के दृष्टिकाण से समाजिक विज्ञान शिक्षण में रचनात्मकता की भूमिका को इस प्रकार समझा जा सकता हैः–

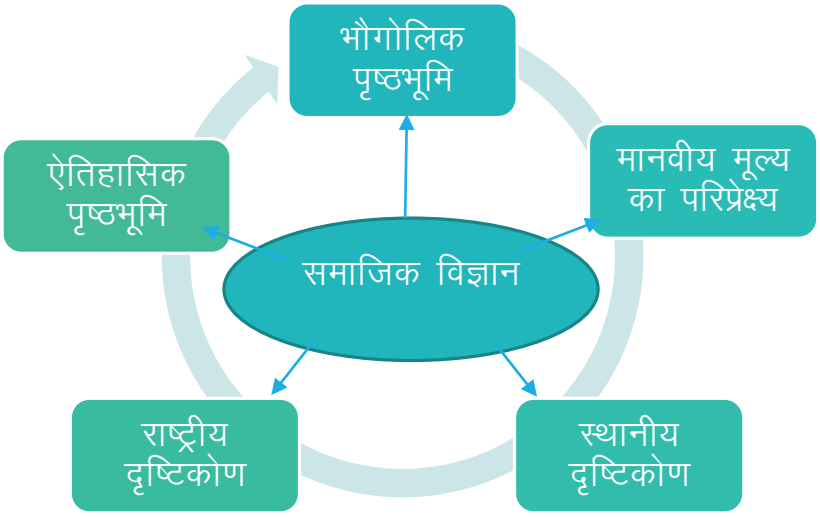

राजनीति शास्त्र बनाम नागरिक शास्त्र :

NCF के अनुसार सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या विकासात्मक मुद्दो पर जोर देती है, किन्तु समानता न्याय और सम्मान जैसे आदर्शो को समाज और राजनीति मे समझने की दिशा में पर्याप्त

नही कहे जा सकते, ज्ञानमीमांसात्मक दृष्टिकोण से परिवर्तन सुझाया गया है, जिसमें राष्ट्रीय एवं स्थानीय मुद्दों के संतुलन को आवश्यक बताया गया है। भारतीय इतिहास एवं अर्थशास्त्र के साथ विश्व के अन्य क्षेत्रों मे ऐतिहासिक एवं आर्थिक विकास के संदर्भ भी पाठ्यक्रम का हिस्सा होना चाहिए। इसलिए पूर्व माध्यमिक स्तर पर नागरिक शास्त्र के अध्ययन को आगे राजनीति शास्त्र के रुप में प्रतिपुष्ट होता है। इसके अंतर्गत अवधारणात्मक स्पष्टता के लिए निम्नलिखित आयामों को शामिल करना उपयोगी होगा।

उच्चप्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान

इतिहास– भारत के अलग–अलग हिस्सों मे विकास विश्व के अन्य भागों में विकास।
भूगोल– पर्यावरण, संसाधन एवं स्थानीय से वैश्विक स्तर पर विभिन्न स्तरों पर विकास।
नागरिक शास्त्र/राजनीति विज्ञान – स्थानीय, राज्य और केन्द्रिय स्तर पर सरकार का गठन, कार्य और सहभागिता की प्रजातांत्रिक प्रक्रियाएँ।
अर्थशास्त्र – आर्थिक संस्थानों की समझ जैसे परिवार बाजार एवं राज्य आदि शामिल है।

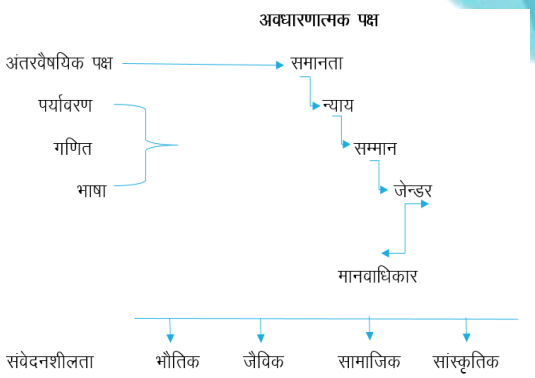

सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विधियाँ

सामाजिक विज्ञान में ऐसी विधियों का उपयोग किया जाना चाहिए जो रचनात्मकता, सौंदर्यबोध, आलोचनात्मक समझ बढ़ाए और बच्चों को अतीत तथा वर्तमान के बीच संबंध बनाने एवं समाज में होने वाले परिवर्तनों को समझने में सक्षम करें। समस्या समाधान, नाटकीकरण, भूमिका निर्वाह (रोल प्ले) कुछ ऐसी विधाएँ हैं जो उपयोग में लायी जा सकती है। हालांकि उनका अभी तक ज्यादा इस्तेमाल नहीं हुआ है शिक्षण में श्रव्य–दृश्य सामग्री, तस्वीरें, चार्टस, नक्शे तथा पुरातत्ववादी, भौतिक संस्कृतियों की प्रतिकृतियों जैसे संसाधनों का भी उपयोग किया जाना चाहिए।

अधिगम क्रिया को सहभागी बनाने के लिए आवश्यकता ऐसे बदलाव की है जिसमें केवल सूचना देने के स्थान पर वाद–विवाद और चर्चाएँ की जाएँ। सीखने का यह तरीका शिक्षक एवं शिक्षार्थी को सामाजिक वास्तविकताओं के प्रति सजग करेगा। व्यक्तियों एवं समुदायों के जीवन के अनुभवों की सहायता से विद्यार्थियों को अवधारणाएँ स्पष्ट की जानी चाहिए। अक्सर यह देखा गया है कि सांस्कृतिक, सामाजिक और वर्ग अंतर कक्षागत संदर्भों में अपने स्वयं के पक्षपात, पूर्वग्रह तथा व्यवहार उत्पन्न करता है। इसलिए शिक्षण के उपागम में खुलापन होना चाहिए। शिक्षकों को कक्षा में सामाजिक वास्तविकता के विभिन्न आयामों के बारे में बात करनी चाहिए तथा स्वयं एवं विद्यार्थियों में स्व–जागरूकता बढ़ाने के लिए कार्य करना चाहिए।

सामाजिक विज्ञान शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु शिक्षक द्वारा किए गए अनेक प्रयास प्रचलित है इनमें से सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार भी उपयोगी तथा अधिक प्रभावी है।

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में अन्य प्रस्तावित उपागम

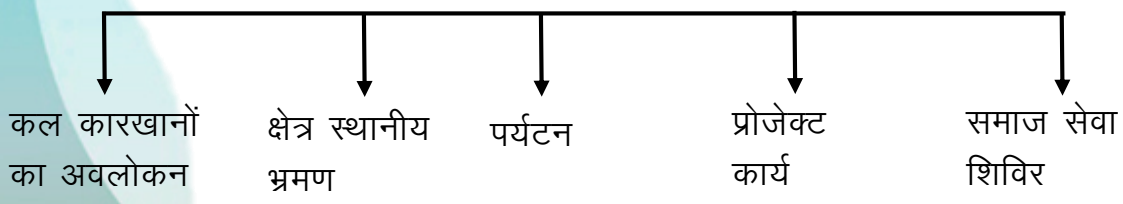

ये सभी कार्य प्रत्यक्ष अनुभवों के लिए सहायक हो सकते है।

शिक्षण अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.)

TLM की सहायता से शिक्षण को प्रभावी और सुगम बनाया जा सकता है। अध्यापन के दौरान पाठ्य सामग्री को समझाने हेतु शिक्षक जिन–जिन सामग्रियों का प्रयोग करता है **TLM** कहलाता है। इन साधनों के प्रयोग से बालकों की ज्ञानेन्द्रियाँ सक्रिय हो जाती है और वे पाठ के कठिन और सूक्ष्म बातों को सफलता पूर्वक समझ जाते है।

क्र.	अध्याय	उप–विषय	लर्निंग आउटकम्स	स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3	स्तर 4
पाठ के बाद : विद्यार्थी कर सकेंगे				याद करना, स्मरण करना, खोजना, लेबल लगाना वर्णन करना	समझना, व्याख्या कर पाना, संक्षेप करना, सुमेलित करना	लागू करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, ड्रा करना, गणना करना	मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, सृजन करना, वर्गीकरण करना
4.	कृषि		802, 808, 809	कृषि कार्यों को जानता है। कृषि उत्पाद के रूपांतरण में सम्मिलित आर्थिक क्रियाओं की सूची बनाता है	कृषि के विभिन्न रूपों को उदाहरण के माध्यम से समझ कर व्याख्या करता है।	कृषि के उपयोगिता को समझता है।	कृषि के प्रकारों की तुलना करता है।

शिक्षण अधिगम सामग्री आधारित पाठ योजना

विषय – भूगोल

कक्षा – आठवीं

शीर्षक – अध्याय 4 – कृषि

उप विषयवस्तु – मुख्य फसलें

LOs – SST808 – विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि के प्रकारों तथा विकास से संबंध स्थापित करते है, ऐसे कारकों का विश्लेषण करते हैं जिनके कारण कुछ देश प्रमुख फसलों जैसे –गेहूँ, चावल, कपास, जूट इत्यादि का उत्पादन करते है। बच्चे इन देशों को विश्व के मानचित्र पर अंकित करते है।

स्तर 1 पौधे से परिष्कृत उत्पाद तक के रूपान्तरण को जानता है।

स्तर 2 अपने परिवेश की विभिन्न फसलों को पहचानता है

स्तर 3 फसलों का वर्गीकरण करता हैं

स्तर 4 भौगोलिक दशाओं के आधार पर विश्व के अन्य देशों के फसल उत्पादन को समझता है।

Word List – खाद्य फसलें, रेशेदार फसलें, पेय फसलें, वर्धनकाल, शस्यकर्तन, मिलेट, चीकायुक्त, जलोढ़ मृदा, सुप्रवाहित, दोमट –मिट्टी, समवितरित, उच्च वर्षा, रोपण कृषि।

Teaching Aids - कुछ फसलों के चित्र एवं नक्शा।

Teaching Learning Process - चित्र पर चर्चा, समूह कार्य।

Previous knowledge – बच्चे विभिन्न प्रकार के फसलों से परिचित है।

स्तर 1 –पौधे से परिष्कृत उत्पाद तक के रूपान्तरण को जानता है।

गतिविधि 1

Linking content – पूर्वज्ञान के आधार पर चित्रों पर चर्चा।

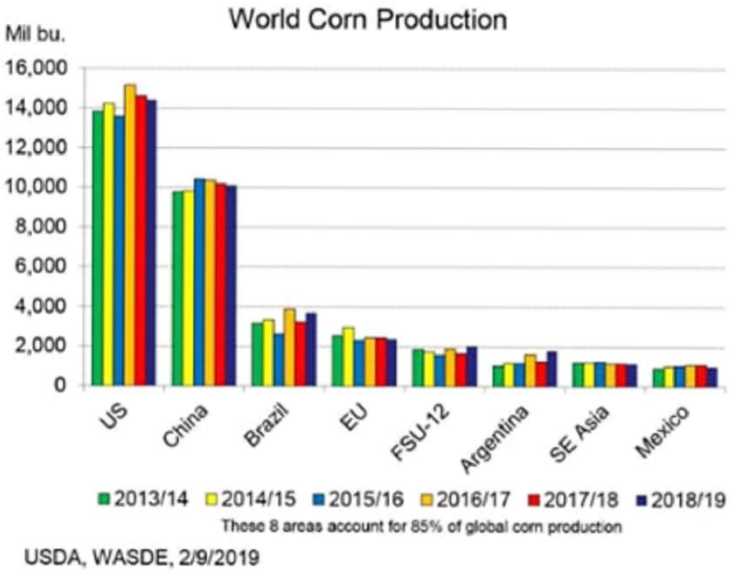

उपरोक्त् चित्र में विश्व के विभिन्न देशों में मक्के के पैदावार का विवरण अंकित है। चित्र को ध्यान से देखकर निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें:–

- सर्वाधिक मक्के की उपज किस देश में होती है ?
- SE Asia में 2017–18 में मक्के की उपज ..... थी। (2000 मैट्रिक टन से अधिक/2000 मैट्रिक टन से कम)
- 4000 मैट्रिक टन मक्के की उपज 2016–17 में ..... में दर्ज की गई हैं।
- 2018–19 में सबसे कम मक्के की उपज किस देश में हुई ?
- 14000 मैट्रिक टन से अधिक मक्के की उपज किस देश में, किस सन् में दर्ज है ?

शिक्षक कथन – कोई भी सामग्री हम तक अलग अलग रूपों में प्राप्त होती है। सामग्री की प्राप्यता जिन क्रियाओं के माध्यम से होती है, उनके आधार पर इन्हें तीन वर्गो में रखा गया है –

- प्राथमिक क्रिया
- द्वितीयक क्रिया
- तृतीयक क्रिया

A. प्राथमिक क्रिया – कृषि उपज, मछली, वनोपज जो हमे सीधे खेतो से, वनों से या प्राकृतिक रूप से प्राप्त होती है उन्हें हम ''प्राथमिक क्रिया'' से प्राप्त मानते हैं।

B. द्वितीयक क्रिया – अचार, पापड़, जैम, नूडल्स, आइस्क्रीम, चाकलेट आदि। ये सभी सामग्री हमारे पास सीधे खेतों से न आकर कही से बन कर आती है। परन्तु इसकी मूल सामग्री प्राथमिक उत्पाद से ही प्राप्त होती है। जैसे– डबलरोटी गेहूँ से बनाई जाती है। अर्थात् जब सामग्री हमें मूल रूप में प्राप्त न होकर परिष्कृत रूप से मिलती है तो उन्हें ''द्वितीयक क्रिया'' द्वारा प्राप्त कहते है गेहूँ खेत में उत्पन्न होता है तथा उससे आटा बनाकर कारखाने में डबलरोटी बनायी जाती है।

C. तृतीयक क्रिया – प्राथमिक और द्वितीयक सामग्री के निर्माण एवं उपभोक्ता तक पहुंचने हेतु जो जिन–जिन साधनों का उपयोग किया जाता है उसे ''तृतीयक क्रिया'' कहते है। जैसे– परिवहन, बैकिंग, विज्ञापन आदि।

आकलन – नीचे दी गई वस्तुओं को उनकी प्राप्ति के आधार पर छाँटकर तालिका में भरो –

चाय, गेहूँ, ज्वार, शक्कर, कपड़ा, जैम, अचार , आवला, केला, संतरा, शरबत, जैम का विज्ञापन, सड़क बैंक, गन्ना, कपास, लोहा, महुआ, डबलरोटी, सोयाबीन, कॉफी, जूता, नीम का दातुन

प्राथमिक क्रिया	द्वितीयक क्रिया	तृतीयक क्रिया

स्तर 2 अपने परिवेश की विभिन्न फसलों को पहचानता है।

गतिविधि 2

चित्र देखकर नाम लिखो –

1. .....

2. .....

3. .....

4. .....

5. .....

6. .....

7. .....

8. .....

9. .....

शिक्षक कथन – कृषि प्राथमिक क्रिया है। विभिन्न फसलों फलों, सब्जियों, फूलों को उगाना पशुपालन कृषि कार्य के अंतर्गत आता है।

प्रश्न	संभावित उत्तर
• **दिखाये गये उत्पादों का उपयोग किन–किन चीजों में किया जाता है?**	• चावल, गेहू, ज्वार, बाजरा, मक्का, एवं रागी का उपयोग भोजन में किया जाता है।
	• कपास का उपयोग कपड़ा बनाने तथा जूट का उपयोग रस्सी, बोरा आदि बनाने में किया जाता है।
	• चाय एवं कॉफी का उपयोग पीने के लिए किया जाता है।

शिक्षक कथन – विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान को विषय वस्तु को जोड़ने हेतु उन्हें बताया जाएगा जिन पदार्थों का उपयोग भोजन के रूप में उपयोग करते है वे **खाद्यान्न फसलें** हैं। जिनका उपयोग वस्त्र बनाने के लिए करते हैं वह रेशेदार फसल है तथा जिसका उपयोग पेय पदार्थ के रूप में करते है वह पेय फसल है।

आकलन – शिक्षक ब्लैकबोर्ड में तीन बॉक्स बनाकर उसमें खाद्य फसल, रेशेदार फसलें व पेय फसलें लिखें तथा मुख्य फसलों की चिट बनायें। अब शिक्षक एक–एक बच्चे को बुलाकर एक चिट को उठाने कहे तथा चिट में दिए गए नाम को संबंधित वाक्य में लिखने कहें। इस प्रकार चिट में दिए गए समस्त फसलों के नाम को उपयुक्त बाक्स में लिखे।

खाद्य फसलें	रेशेदार फसलें	पेय फसलें

स्तर 3 – फसलों का वर्गीकरण करता हैं।

गतिविधि 3

दिए गए चार्ट का अवलोकन कर फसलों की विशेषताओं के आधार पर कृषि के प्रकारों को लिखिए

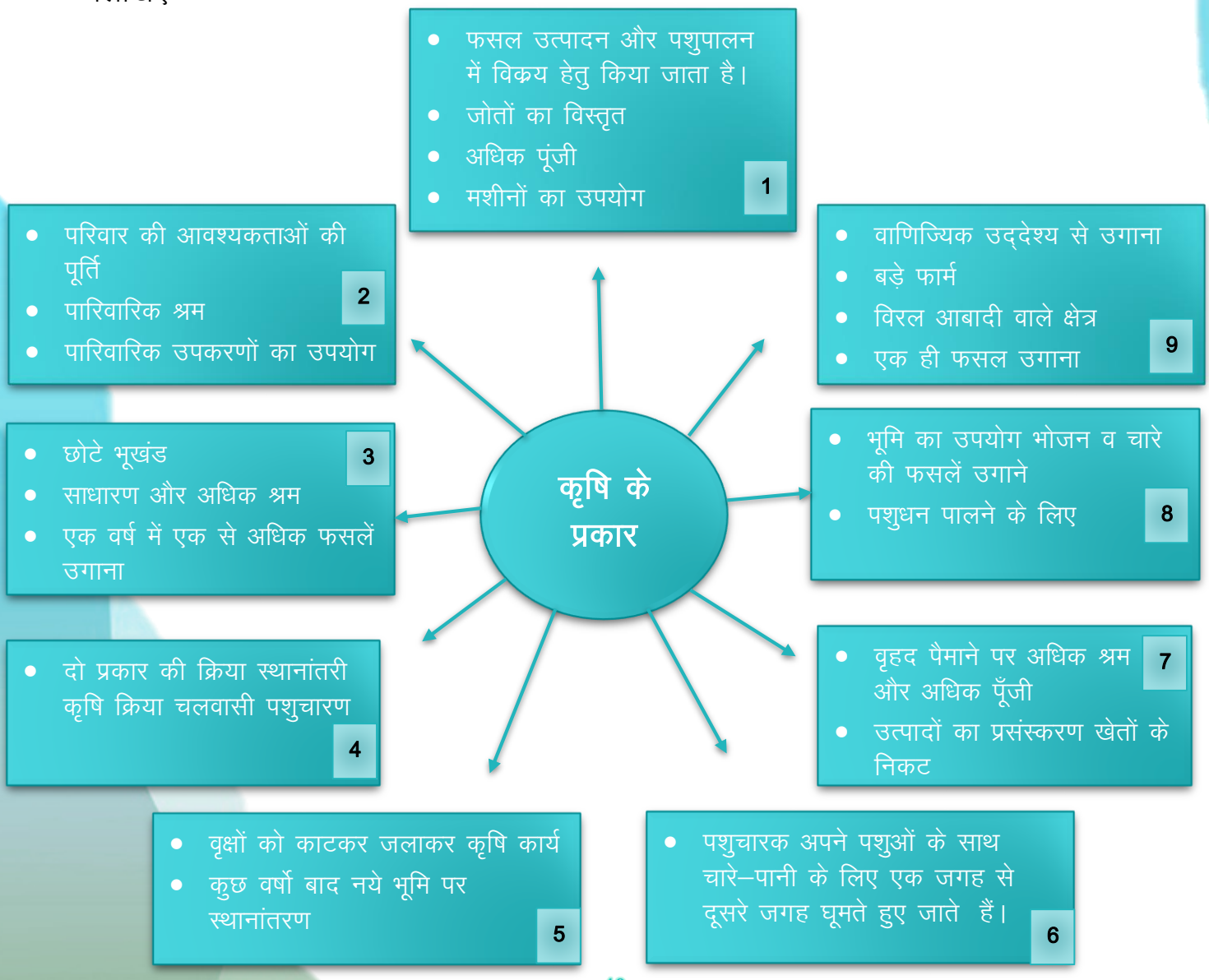

स्तर 4 – भौगोलिक दशाओं के आधार पर विश्व के अन्य देशों के फसल उत्पादन को समझता है।

गतिविधि 4

तीनों फसलों की विस्तृत रूप से चर्चा करने हेतु शिक्षक बच्चों के पूर्व ज्ञान का उपयोग करते हुए विषयवस्तु को विस्तारित करेंगे।

शिक्षक द्वारा किए गए प्रश्न	विद्यार्थियो द्वारा दिए गए संभावित उत्तर
• **आपका मुख्य भोजन क्या है?**	• चांवल, रोटी, सब्जी, दाल आदि
• **अधिकांश लोग चावल क्यों खाते है**	• क्योंकि यहाँ उत्पादन अधिक होता है।
• **हमारे राज्य में चावल का उत्पादन अधिक क्यों होता है?**	• यहाँ की जलवायु मिट्टी चावल के लिए उपयुक्त है।

चावल और गेहूँ के लिए आवश्यक भौगोलिक दशायें– कोई भी कृषि उपज प्रत्येक स्थान में उत्पादित नहीं की जा सकती। क्योंकि फसल उत्पादन हेतु अलग–अलग भौगोलिक दशाओं की आवश्यकता होती है किसी फसल को अधिक पानी अधिक तापमान चाहिए तो किसी फसल को कम पानी तापमान यही कारण है कि विश्व के अलग–अलग देशों में अलग अलग फसल होती हैं।

फसल	तापमान	वर्षा	मिट्टी	उत्पादक देश
चावल	उच्च तापमान	अधिक आर्द्रता एवं वर्षा	चीकायुक्त जलोढ मिट्टी जिसमें जल रोकने की क्षमता होती है।	चीन, भारत, जापान, श्रीलंका, मिश्र। विश्व में चीन चावल का उत्पादन सबसे अधिक करता है।
गेहूँ				
मिलेट				
पटसन				
कॉफी				

आकलन – गेहूँ, मिलेट, पटसन एवं कॉफी की फसलों के बारे मे उपरोक्त जानकारी एकत्रित कर सारणी को पूरा करें।

Recapitulation -

- आज की गतिविधि से हमने सीखा कि आर्थिक क्रियायें क्या हैं ?
- कृषि के प्रकार व मुख्य उपजें ।
- फसल हेतु मुख्य आवश्यक भौगोलिक दशाएँ।

- विश्व में विभिन्न फसलों का उत्पादन ।

Assignment - दिए गए विश्व के नक्शे में संकेत चिन्ह के आधार पर चावल उत्पादन क्षेत्रों के नाम पहचान कर लिखो तथा नक्शें में गेहूं उत्पादन देशों को दर्शाओ।

चावल ●	चावल उत्पादक देश –
गेहूँ ▲	गेहूँ उत्पादक देश –

- पाठ प्रदर्शन के उपरांत प्रतिभागियों से पाठ में उपयोग किए गए TLM पर चर्चा की जायेगी एवं अन्य शिक्षण सामग्री संबंधित सुझाव आमंत्रित किए जायेगें ताकि पाठ को प्रभावी बनाया जा सकें।
- चर्चा के दौरान इस बात का चिंतन किया जा सकेगा कि TLM की उपयोगिता से कक्षा अंतःक्रिया किस तरह प्रभावित हुई।

Day - 4

Ice breaker

शैक्षिक अंत्याक्षरी

उद्देश्यः–

1. प्रतिभागियों को अभिव्यक्ति का अवसर देना।
2. सुनकर समझने का कौशल विकसित करना।
3. विषय के प्रति रूझान बढ़ाना।
4. परस्पर परिचय का अवसर प्रदान करना।
5. समय का सदुपयोग करना।

कार्यविधिः– समूह के सदस्यों को अंत्याक्षरी संबंधी निर्देश दिए जावें। चूंकि सामाजिक विज्ञान विषय समूह है अतः विषय संबंधित शब्द से शुरूआत की जावें, उनके विषय में 5 वाक्य कहेंगे। अगला प्रतिभागी, प्रथम प्रतिभागी द्वारा कहें शब्द के अंतिम अक्षर से पुनः नया शब्द कहा जावेगा और उसके विषय में 5 वाक्य कहेंगे। गतिविधि में यह ध्यान रखा जावे कि प्रत्येक वक्ता द्वारा दी गई जानकारी में कुछ नई बात शामिल हो तो अन्य प्रतिभागी अंत में जोड़ सकें। इस प्रकार प्रत्येक प्रतिभागी द्वारा प्रस्तुती दी जावेगी। समूह में कोई एक सदस्य सभी प्रतिभागियों द्वारा दी गई जानकारी को नोट किया जावेगा और अंत में उसका वाचन किया जावेगा।

जैसे प्रथम प्रतिभागी ने 'त' अक्षर से तिरंगा कहा, तिरंगा पर 5 वाक्य इस प्रकार हैः–

1. हमारे भारत का ध्वज तिरंगा कहलाता है।
2. तीन रंगों के कारण इसे तिरंगा कहते है।
3. तिरंगा हमारे देश की पहचान है।
4. केसरिया – बलिदान, सफेद– शांति, हरा– हरियाली/समृद्धि का प्रतीक है।
5. तिरंगे का सम्मान करना हमारा दायित्व है।

तिरंगा का अंतिम अक्षर ग है द्वितीय प्रतिभागी ने **'ग'** से ग्राम पंचायत कहा और बताया कि इसके कार्य हैः–

1. ग्राम की साफ–सफाई करवाना।
2. गाँव के विकास के लिए योजना बनाना।
3. ग्राम पंचायत का मुखिया सरपंच होता है।

इस प्रकार क्रमशः प्रत्येक प्रतिभागी अपनी प्रस्तुती करेंगे।

गतिविधि का प्रतिफलः–

1. प्रत्येक प्रतिभागी द्वारा भिन्न–भिन्न शब्दों पर अपने विचार दिए जायेगें इससे अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास होगा।
2. प्रत्येक सदस्य अपनी बारी के इंतजार के साथ नये शब्द की मुख्य जानकारियों के लिए तत्पर रहेंगे।
3. प्रतिभागी द्वारा दी गई जानकारी को सभी ध्यान से सुनेंगे एवं सुनकर समझने का कौशल विकसित होगा।
4. सभी को एक दूसरे के विचारों को जानने का अवसर मिलेगा।
5. यह गतिविधि ज्ञान को समृद्ध करने एवं समय का सदुपयोग करने में मददगार होगी।

उपचारात्मक शिक्षण

उपचारात्मक शिक्षण एक प्रकार का शिक्षण या अनुदेशात्मक कार्य होता है जिसे किसी एक विद्यार्थी या विद्यार्थियों के समूह को किसी विषय विशेष या प्रकरण विशेष से संबंधित किसी विशेष समस्या या कठिनाई के निवारण हेतु प्रयोग में लाया जाता है।

उपचारात्मक शिक्षण से संबंधित कुछ मुख्य बातें इस प्रकार हैं

1. यदि समस्या छात्र विशेष की है तो इसके लिए वैयक्तिक एवं विशिष्ट प्रकार के उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था की जाएगी।

2. यदि समस्या अधिकांश छात्रों की है तो इसके लिए सामूहिक उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था की जाएगी।

उपचारात्मक शिक्षण के सोपान

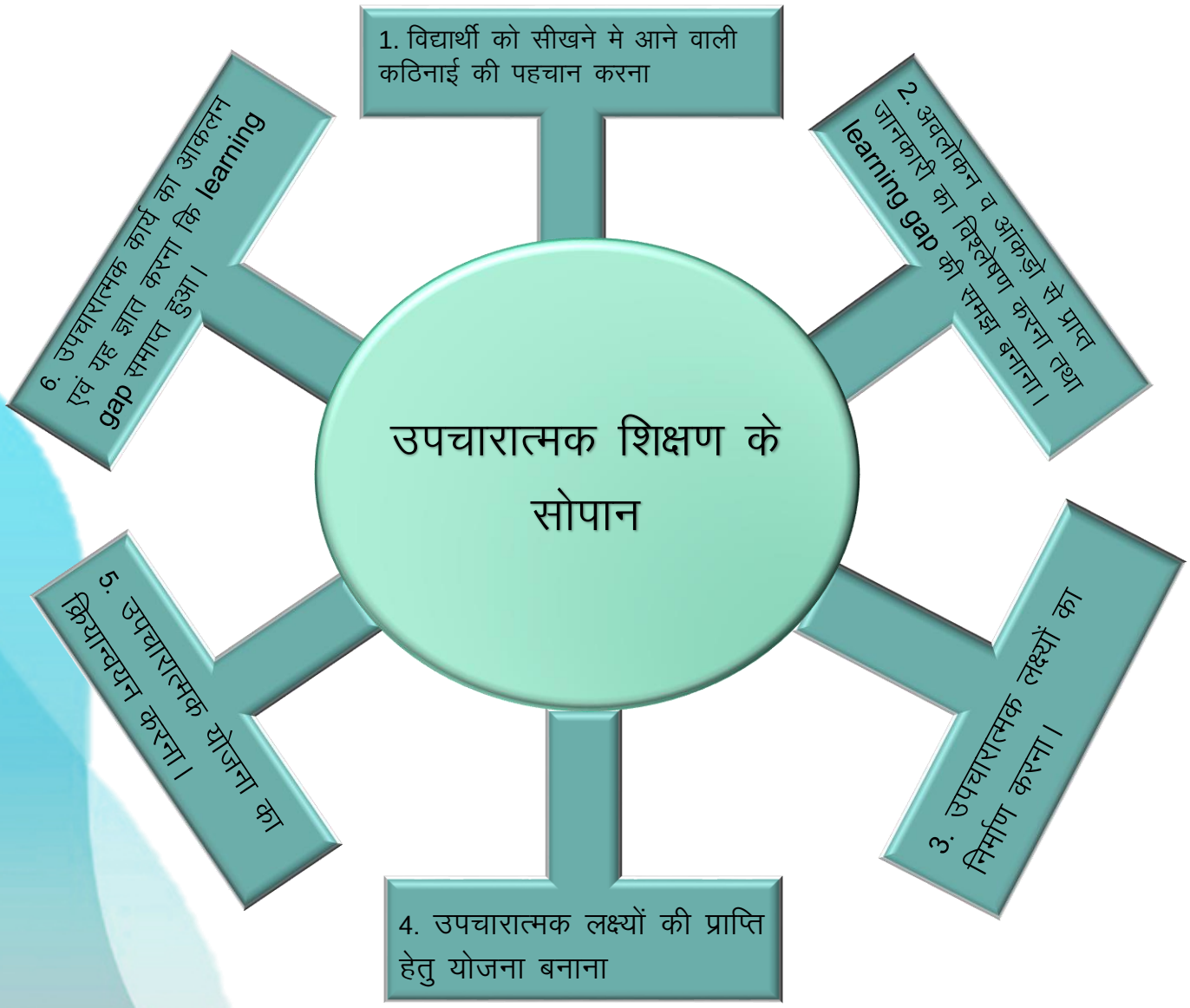

अधिगम सम्प्राप्ति प्रतिफल क्र. 710 एवं 730 संबंधी अवधारणाओं में यदि विद्यार्थी पिछड़े हुए है तो उपचारात्मक शिक्षण के सोपानों के माध्यम से समाधान की पहल करना शिक्षक का मुख्य दायित्व है।

उपचारात्मक योजना (Remediation

विद्यार्थी .....

शिक्षक .....

कोर्स ..... तारीख .....

विषय/प्रोजेक्ट .....

समस्या	समस्या का हल	आवश्यक संसाधन

मूल्यांकन, सीखने के प्रतिफल और शिक्षण गतिविधियों के बीच संबंध :

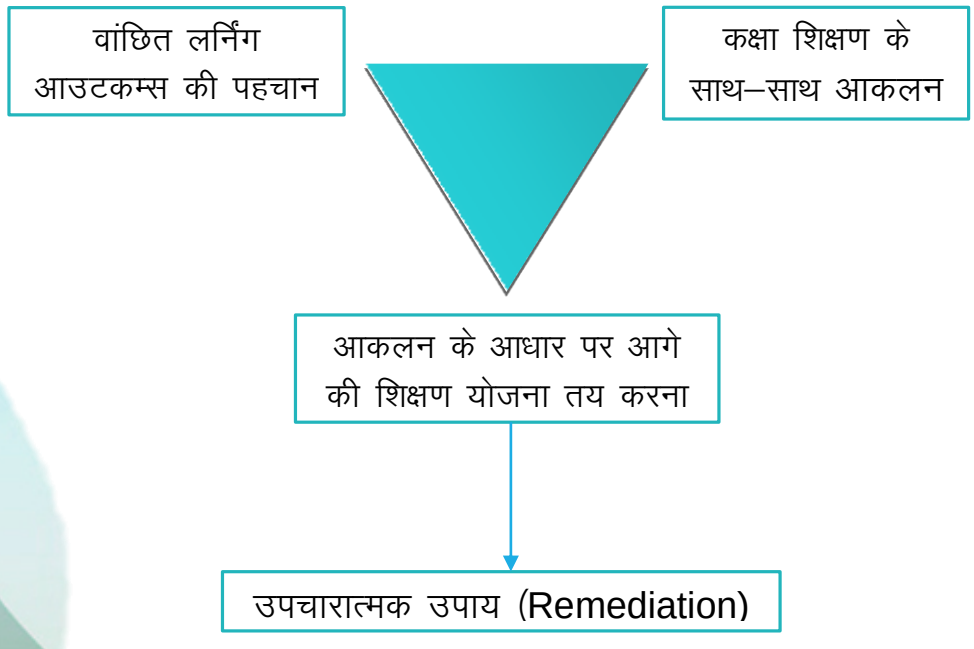

उपचारात्मक शिक्षण हेतु गतिविधि का उदाहरण

सर्वेक्षण सह चर्चा – ऊर्जा संरक्षण जागरूकता

निर्देश – शिक्षक कक्षा को 2 समूहों में बांटे तथा 1 समूह को ऊर्जा के स्त्रोत जिसमें पेट्रोल/डीजल के उपयोग व संरक्षण के मुद्दे पर कार्य करने को दे एवं दूसरे समूह को जल संरक्षण हेतु सुझाव तथा संरक्षण की चर्चा करवायें। सर्वेक्षण के पश्चात् दोनों समूह कक्षा के समक्ष अपनी प्रस्तुती दें (भूगोल – कक्षा 7 – संबंधित अध्याय 4 – वायु, अध्याय 5 – जल LOs – SST710)

समूह क्रमांक 01 (चर्चा का विषय – ईधन का उपयोग)

क्र.	घर में पेट्रोल/डीजल से चलने वाली गाड़ियों की संख्या	पेट्रोल व डीजल से चलने वाली गाड़ियों से हमें किस प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ रहा है	घर में बिना पेट्रोल/ डीजल से चलने वाली गाड़ियों की संख्या	पेट्रोल/डीजल की बचत के लिए हमें क्या प्रयास करना चाहिए

समूह क्रमांक 02 (चर्चा का विषय – जल)

क्र.	जल का उपयोग आप किन–किन कार्यों में करते हैं ?	जल प्राप्ति के कौन–कौन से साधन हैं?	किस मौसम में आपके क्षेत्र में जल की कमी होती हैं ?	अपने आस–पास के पौधों व जीव जंतुओं पर जल की कमी से क्या प्रभाव पड़ते देखा हैं ? (तितली, चिड़िया, और विशेष प्रकार के पौधें)	आप अपने दैनिक जीवन में जल की बचत कैसें करेंगे ?	जल संबंधी कहावत/मुहावरा लिखो

Day - 5

Ice breaker

अपना साथी ढूँढो

उद्देश्य :–

1. खोज प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
2. अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना।

कार्यविधिः–

1. गतिविधि हेतु विभिन्न जोड़ी से संबंधित चित्र तैयार करना।
2. चिट विषय आधारित जैसे– नदियों के नाम व उद्गम/राज्य व उसकी राजधानी /ग्रंथ व लेखक/राज्य व उसके नृत्य व उसके नृत्य आदि।
3. तैयार चित्र को एक बाक्स में रख कर प्रतिभागियों को उठाने को कहें। जब सभी प्रतिभागी चिट उठा लें तो उन्हे निर्देश दे कि आपकी चिट मे जो लिखा है उससे संबंधित चिट अन्य प्रतिभागी के पास होगी, आप अपने जोड़ीदार का पता लगावे जिसका संबंध आपकी चिट से है इस प्रकार आपका जोड़ीदार मिल जावेगा।
4. आप दोनों एक दूसरे से परिचय प्राप्त करें तथा दी गई चिट के विषय से संबंधित जानकारी अपने साथी को दें, इस प्रकार दोनो सदस्य एक दूसरे का परिचय देकर चिट की जानकारी को प्रस्तुत करेंगे।
5. सभी समूह इस प्रकार आपस मे परिचय देकर, चिट की जानकारी प्रस्तुत करेंगे।
   - इस गतिविधि से प्रतिभागियों मे खोज की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलेगा।
   - नए सदस्य के साथ सामंजस्य स्थापित कर अपने विचारों को प्रस्तुत करने की क्षमता का विकास होगा।
   - सदस्य में अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होगा।

पाठ योजना क्या है?

सीखने–सीखाने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है– पाठयोजना।

शिक्षक द्वारा किसी विषय वस्तु के अध्यापन के पूर्व उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए तैयार की जाती है। किसी ईकाई को विभिन्न भागों में बाटँकर क्रमबद्ध तरीके से अध्यापन की योजना तैयार की जाती है। एक शिक्षक को कक्षा मे जाने के पूर्व अपने अध्यापन हेतु पाठयोजना निर्माण में 3 बातों का ध्यान रखना चाहिए

1. क्या पढ़ाना है 2. क्यों पढ़ाना है 3. कैसे पढ़ाना है

शिक्षक द्वारा कक्षा मे किए जाने वाले संपूर्ण कार्य का लिखित विवरण पाठयोजना में शामिल होता हैं।

शिक्षक को शिक्षण के दौरान निम्न बातों का ध्यान रखने की आवश्यकता है–

1. छात्रों की सहभागिता एवं गतिविधियों के आधार पर विषयवस्तु की अवधारणा की पुष्टि
2. शिक्षक की सुविधादाता की भूमिका
3. उचित टी.एल.एम का प्रयोग
4. टी. एल. एम निर्माण में विद्यार्थियों का सहयोग एवं नवाचारों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण ।
5. पाठ्यपुस्तक/पाठ्यवस्तु के प्रति समसामयिक समीक्षात्मक दृष्टिकोण के विकास की जागरुकता

पाठ योजना

कक्षा ..... दिनांक .....

विषय ..... कालांश .....

शीर्षक .....

उपशीर्षक/प्रकरण .....

1. अधिगम प्रतिफल :

स्तर 1 .....

स्तर 2 .....

स्तर 3 .....

स्तर 4 .....

2. शिक्षण सहायक सामग्री

3. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

a. गतिविधि

पूर्व ज्ञान

विषय से संबद्धता

b. शिक्षण अधिगम प्रविधियाँ

c. बैठने की व्यवस्थाः व्यक्तिगत/जोड़ी/साझा/समूह

d. कक्षा/बाहर/प्रयोगशाला/कोई अन्य (निर्दिष्ट)

4. आकलन –

5. सारकथन/पुनर्कथन -

6. प्रदत्त कार्य –पाठ योजना के प्रभाव का शिक्षक द्वारा समीक्षा –

विद्यार्थियों के सामाजिक विज्ञान में कम उपलब्धि वाले सीखने के प्रतिफल के अनुसार प्रस्तावित गतिविधियों का समावेश किया है। चूंकि सामाजिक विज्ञान में इतिहास भूगोल एवं नागरिक शास्त्र (तीनों विषय) समाहित हैं अतः तीनों विषयों के कम उपलब्धि प्राप्त सीखने के प्रतिफल आधारित गतिविधियाँ प्रस्तावित की गई हैं। विवरण निम्नानुसार है–

क्र.	गतिविधियाँ	कक्षा	विषय	LOs क्रमांक व विवरण
1	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	6वीं	नागरिक शास्त्र	624 – सरकार के विभिन्न स्तरों–स्थानीय, प्रांतीय, संघीय को पहचानते हैं।
2	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	6वीं	इतिहास	618– प्राचीन काल के विभिन्न धर्मों और विचारों के मूल तत्वों और मूल्यों का विश्लेषण करते हैं।
3	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	6वीं	भूगोल	620 – अपने आस–पास मानवीय विविधताओं के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करते हैं।
4	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	7वीं	इतिहास	720– उन कारको का विश्लेषण करते हैं जिससे नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों (भक्ति/सूफी) का उदभव हुआ।
5	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	7वीं	नागरिक शास्त्र	730– विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान को उपयुक्त उदाहरणों के साथ वर्णित करते है।
6	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	7वीं	भूगोल	710– प्राकृतिक संसाधनों, जैसे – वायु, जल, ऊर्जा, पादप एवं जंतुओं के संरक्षण के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं।
7	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	8वीं	नागरिक शास्त्र	823 – अंतरिम सरकार की स्थापना से लेकर भारतीय संविधान के निर्माण की विभिन्न प्रक्रियाओं को क्रमबद्ध रूप में जानता है।
8	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	8वी	भूगोल	808 – ऐसे कारकों को विश्लेषण करते है जिनके कारण कुछ देश प्रमुख फसलों जैसे–गेहूं, चावल, कपास, जूट इत्यादि का उत्पादन करते हैं। बच्चे इन देशों को विश्व के मानचित्र में अंकित करते हैं।
9	सुझावात्मक गतिविधि (कुल संख्या 3)	8वीं	इतिहास	821 - 1870 के दशक से आजादी तक में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की रूपरेखा बताता है।

सुझावात्मक गतिविधियाँ

LOs – SST –624 सरकार के विभिन्न स्तरों–स्थानीय, प्रांतीय, संघीय को पहचानते हैं।

नागरिक शास्त्र – कक्षा 6 – संबंधित अध्याय

- पाठ – 3 पंचायती राज
- पाठ – 4 नगर पालिका व नगर निगम
- पाठ – 5 जिला प्रशासन

गतिविधि 1

- दी गई तालिका को देखकर ग्राम पंचायत, नगर पालिका व नगर निगम का गठन कैसे होते हैं, अपने शब्दों मे लिखों।
- ग्राम पंचायत, नगर पालिका व नगर निगम में क्या अंतर हैं?

ग्राम पंचायत	नगर पालिका	नगर निगम
⬇	⬇	⬇
ग्राम पंचायत प्रधान	नगर पालिका प्रधान	नगर निगम प्रधान
⬆	⬆	⬆
सरपंच	अध्यक्ष	प्रधान (महापौर)
⬆	⬆	⬆
पंच	वार्ड सदस्य	पार्षद सदस्य
⬆	⬆	⬆
गाँव की जनता	वार्ड की जनता	वार्ड की जनता

गतिविधि 2

दिए गए बिन्दुओं के आधार पर गाँव और शहर में अंतर लिखो।

बिन्दु	गाँव	शहर
• नाम	....	....
• मुख्य व्यवसाय	....	....
• मकान	....	....
• यातायात के साधन	....	....
• स्वास्थ्य सुविधाएँ	....	....
• शिक्षा	....	....
• शासन	....	....

गतिविधि 3

आपके गाँव/शहर की कौन–कौन सी समस्याएँ हैं, सूची बनाओं व उसके समाधान के लिए आप क्या करोगे?

क्रमांक	गाँव/शहर की समस्या	समाधान

LOs – SST618 – प्राचीन काल के विभिन्न धर्मों और विचारों के मूल तत्वों और मूल्यों का विश्लेषण करते हैं।

इतिहास – कक्षा 6 – संबंधित अध्याय 6 – नवीन धार्मिक विचारों का उदय

गतिविधि 1

भारत के विभिन्न धर्म एवं धर्म ग्रंथो की सूची तैयार करो तथा धर्म संबंधी संदशे या महत्वपूर्ण तथ्य लिखों।

क्र.	धर्म	धर्म ग्रंथ का नाम	रचयिता/रचनाकार	महत्वपूर्ण तथ्य/संदेश

गतिविधि 2

सर्वधर्म समभाव की भावना को ध्यान में रखते हुए शासन द्वारा विभिन्न धर्म के विशेष दिनों में शासकीय अवकाश घोषित किया जाता है। 2020 के कैलेण्डर का अवलोकन करो और बताओ कि किस–किस धार्मिक त्यौहारों के अवसर पर शासकीय अवकाश दिया जाता है?

क्र.	अवकाश तिथि	धार्मिक त्यौहार का नाम	क्यों मनाते है?

गतिविधि 3

आपके गाँव या शहर में कौन–कौनसे त्यौहार मनाए जाते है उनकी सूची बनाइए। इनमें से कौन–सा त्यौहार सभी समुदाय के द्वारा मनाया जाता हैं और कैसे?

LOs – SST620 – अपने आस–पास मानवीय विविधताओं के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करते हैं।

भूगोल – कक्षा 6 – संबंधित अध्याय 7 – हमारा देश भारत

गतिविधि 1

भारत के मानचित्र में अपने राज्य को ढूंढों और उसके पड़ोसी राज्य/देश को चिन्हांकित कर उन राज्यों के नाम लिखो तथा नीचे दी गई तालिका को भरकर विविधता को समझो।

क्र.	राज्य का नाम	भाषा	पर्यटन स्थल	उद्योग व्यवसाय	किस देश के निवासी हैं	वेशभूषा

गतिविधि 2

भारत के विभिन्न राज्यों के लोकनृत्य और राज्य का नाम पहचानकर उनकी सूची तैयार करें –

क्र.	राज्य का नाम	लोकनृत्य
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		

- गतिविधि 1 एवं 2 का विश्लेषण कर बताओ कि विभिन्न राज्य व उनकी संस्कृति में अनेकता के बाद भी हम किस रूप में एक है।

गतिविधि 3

पहाड़ी, पठारी तथा मैदानी क्षेत्रों की विशेषताओं का निम्नलिखित बिन्दुओं पर वर्णन करो –

बिंदु	पहाड़ी	पठारी	मैदानी
धरातल			
भूमि का ढाल			
जलस्रोत्र			
मिट्टी			
फसल			
व्यवसाय			
लोगों का जीवन			

LOs – SST720 – उन कारको का विश्लेषण करते हे जिससे नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों का (भक्ति और सूफी) का उद्भव हुआ।

इतिहास – कक्षा 6 – संबंधित अध्याय 6 – नवीन धार्मिक विचारों का उदय

★ **720** (NCERT द्वारा कक्षा 7 में दर्शाया गया है। उससे संबंधित पाठ कक्षा 6 वीं की पाठ्यपुस्तक मे है।)

गतिविधि 1

नीचे कुछ वाक्य या तथ्य दिए गए है एवं उनके सामने एक संख्या दी गई है। आप वाक्य या तथ्य को ध्यान से पढ़े एवं उससे संबंधित उत्तर को प्रदत्त शब्द संख्या के आधार पर पिरामिड में भरें –

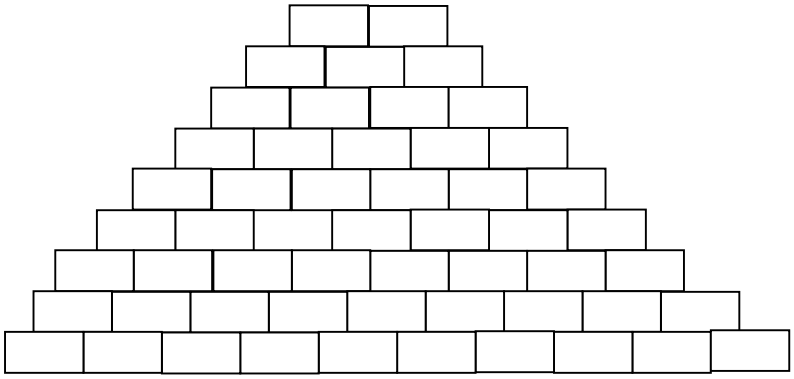

वाक्य / तथ्य
राजा राज चोल द्वारा बनवाया गया एक मंदिर (9)
उत्तर भारत में मंदिरों की शैली (3)
अमीर खुसरों के गुरू (8)
कबीरधाम जिले का एक प्रसिद्ध मंदिर (5)
कल्चुरि शासकों द्वारा बनवाया गया एक मंदिर (10)
जाजल्यदेव द्वारा निर्मित छत्तीसगढ़ का एक मंदिर (7)
अलवार में संतों की संख्या (2)
एक सूफी संत जो पहेलियों के लिए प्रसिद्ध है। (6)
शिव भक्त संत (4)

गतिविधि 2

नीचे जैन एवं बौद्ध धर्म की शिक्षाओं से संबंधित कुछ वाक्य दिए गए है। 'नवीन धार्मिक विचारों का उदय' (कक्षा छठवीं, अध्याय 6) पाठ के आधार पर दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़कर वर्गीकृत करें।

शिक्षाएँ:–

1. सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान एवं सम्यक चरित्र– इन त्रिरत्नों को प्राप्त करने के लिए 5 महाव्रतों का पालन करना जरूरी है।
2. संसार दुःखमय है।
3. तृष्णा को त्यागने से दुखों से मुक्ति मिलती है।
4. इंद्रियों के विजेता को ''जिन'' कहा जाता है।
5. कठोर वचन बोलना भी हिंसा है।
6. मनुष्य को मध्यम मार्ग अपनाना चाहिए।
7. दुःखों पर विजय प्राप्त करना निर्वाण कहलाता है।
8. जीवन के 4 आर्य सत्य है।
9. धर्म की शिक्षाओं के तीन ग्रंथ ''त्रिपिटक'' कहलाते है, जिनकी प्रमुख भाषा प्राकृत है।
10. चोरी, मिथ्या संभाषण एवं आचरण से दूर रहना अस्तेय है।
11. कठोर तपस्या से प्राप्त सत्य का ज्ञान संबोधी कहलाता है।
12. भिक्षुओं का निवास स्थान विहार कहलाता है।

बौद्ध धर्म की शिक्षाएं	जैन धर्म की शिक्षाएं

गतिविधि 3

दिए गए चित्र को पहचान कर संत का नाम लिखें। उनके कुछ ऐसे दोहों का उल्लेख करें जिनसे समाज को नई दिशा प्राप्त हुई हो/अथवा समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया गया हो।

.....

LOs – SST730 – विभिन्न क्षत्रों में महिलाओं के योगदान को उपयुक्त उदाहरणों के साथ वर्णित करते है।

नागरिक शास्त्र – कक्षा 7 – संबंधित अध्याय – समाज और महिलाओं की भूमिका

गतिविधि 1

छत्तीसगढ़ राज्य की प्रसिद्ध महिलाओं को पहचान कर उनके नाम लिखो तथा उनसे संबंधित दी गई विभिन्न जानकारियों को चित्र के साथ सुमेलित कर कॉलम में लिखो।

.....	.....	.....	.....

1. छत्तीसगढ़ सरकार ने राज्य के सर्वोच्च खेल अलंकरण गुण्डाधूर सम्मान से विभूषित किया।
2. ये छत्तीसगढ़ की वर्तमान राज्यपाल है।
3. ये पंडवानी गायिका है।
4. ये छत्तीसगढ़ की पहली महिला सांसद थी।
5. ये भारत की पूर्व हॉकी खिलाड़ी है।
6. इसका नाम तीजन बाई है।
7. इनका नाम अनुसूईया उइके है।
8. दूर्ग जिले के पाटन विकासखण्ड के गनियारी में जन्म हुआ।
9. छत्तीसगढ़ मजदूर कल्याण संगठन भिलाई की संस्थापक थी।
10. इनका जन्म दुर्ग जिले के केलाबाड़ी में हुआ।
11. इनका जन्म असम के नौगाँव में हुआ था।
12. छत्तीसगढ़ विधानसभा का नामकरण इन्हीं के नाम से हुआ।
13. इनका नाम सबा अंजुम है।
14. इनका जन्म मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा जिले में हुआ था।
15. आदिवासी महिलाओं के हक के लिए आवाज उठाती रही।
16. इन्हें पद्म भूषण सम्मान प्राप्त हुआ है।

गतिविधि 2

विभिन्न क्षेत्रों में योगदान देने वाली महिला प्रतिभाओं के नाम का संग्रह किया हुआ है। आप उनका परिचय ढूंढकर योगदान क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण करो और उनकी तस्वीर चिपकाओ–

लता मंगेश्कर, अनुसूइया उइके, इंदिरा गांधी, मीरा कुमार, कल्पना चावला, प्रतिभा पाटिल, कर्णम मल्लेश्वरी, ममता बेनर्जी, तीजन बाई, मृणालिनीसाराभाई, हिमादास

क्र.	महिलाओं के नाम	कार्यक्षेत्र	चित्र	उपलब्धियाँ	पुरस्कार
1	लता मंगेशकर	गायन		भारत की सबसे लोकप्रिय गायिका है। इन्होंने 30 से अधिक भाषाओं में फिल्मी और गैर–फिल्मी गाने गाए है। इनकी पहचान भारतीय सिनेमा में 1 पार्श्व गायक के रूप में रही है।	पदम् भूषण पदम् विभूषण भारत रत्न दादा साहेब फाल्के

गतिविधि 3

नीचे के वर्ग के खाने में कुछ भारतीय महिलाओं के नाम दिए गए हैं जिन्होंने अलग–अलग क्षेत्रों में प्रसिद्धि पाई है। वर्ग के नीचे 1 से 20 से संबंधित महिलाओं के नाम आपको ढूँढने हैं–

कि	न	सा	रे	पा	लि	ना	जो	छि	सु	स्मि	ता	से	न	रा	ज
र	रा	ती	सु	म	र	त	म	हा	दे	वी	व	र्मा	न	स	दा
ण	म	प	धा	प	प्र	ति	भा	पा	टि	ल	लु	ने	दी	पा	दा
बे	धी	श्रे	रा	ल	क्ष्मी	बा	ई	न	प	सु	भा	ष	चं	द्र	सा
दी	म	म	म	ता	बे	न	र्जी	न्द्री	ती	अ	मृ	ता	प्री	त	ह
री	र	न	चं	मं	री	ला	छे	दी	क	ज	ना	मी	ज	रा	ब
ता	वि	जा	द्र	गे	पी	ब	ज	वा	ह	र	न	श	शि	व	फा
सा	न्द्र	क	न	श	ता	त्या	टो	पे	सा	वि	त्री	बा	ई	फू	ले
इ	ना	र	अं	क	ल्प	ना	चा	व	ला	क	व	ई	ई	प	का
ना	थ	ली	ला	र	अ	क	ब	र	मि	ना	जा	सी	न	आ	ब
ने	टै	च	इं	स	रो	जि	नी	क	सी	ता	दे	धी	रे	शा	छे
ह	गो	छ	फ	दि	ई	स	शो	ला	पी	ख	ली	क	न्द्र	मं	न्द्री
वा	र	मो	ती	दि	रा	म	ना	थ	को	विं	द	रा	मे	गे	पा
ल	क	म	ला	सा	मा	गां	धा	री	ना	जा	के	सा	ज	श	ल
क	र्ण	म	म	ल्ले	श्व	री	धी	ग	पी	टी	उ	षा	री	क	क
सु	मि	त्रा	म	हा	ज	न	रा	म	ल	क्ष्म	ण	मी	रा	र	ता

1. पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री (ममता बेनर्जी)
2. एक दिव्यांग नृत्यांगना (सुधा चन्द्रन)
3. एक प्रख्यात गायिका (लता मंगेश्कर)
4. एक महिला वैज्ञानिक (कल्पना चावला)
5. झांसी की रानी (लक्ष्मी बाई)
6. छत्तीसगढ़ की पंडवानी गायिका (तीजन बाई)
7. एक महिला पर्वतारोही (बछेन्द्री पाल)
8. एक महिला प्रधानमंत्री (इंदिरा गांधी)
9. महाभारत की एक पात्र (गांधारी)
10. राम की पत्नी (सीता)
11. वह महिला जो कृष्ण भक्ति में लीन थी। (मीरा)
12. भारत की महिला राष्ट्रपति (प्रतिभा पाटिल)
13. एक समाज सेविका (सावित्री बाई फुले)
14. एक लोकसभा स्पीकर (सुमित्रा महाजन)
15. एक महिला क्रिकेटर (मिताली राज)
16. प्रथम मिस यूनिवर्स (सुस्मिता सेन)
17. प्रथम महिला IPS (किरण बेदी)
18. प्रसिद्ध बैडमिंटन खिलाड़ी (साइना नेहवाल)
19. उड़न परी (पी.टी.उषा)
20. एक लेखिका (महादेवी वर्मा)

अधिगम समप्राप्ति प्रतिफल क्रमांक 710

गतिविधि 1

नीचे दिये चित्रों को पहचानकर संबंधित संसाधनों के नाम लिखिए एवं उसके संरक्षण के चार–चार उपाय लिखिए –

संरक्षण के उपाय

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....

गतिविधि 2

शिक्षक कक्षा के समस्त छात्र/छात्राओं को दो समूह में विभाजित कर प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से संबंधित प्रश्न मंच की गतिविधि करावें –

क्र	प्रश्न	उत्तर
1	विश्व पर्यावरण दिवस कब मनाया जाता है।	
2	नवीकरणीय संसाधन के दो उदाहरण बताइये।	
3	अनवीकरणीय संसाधन के दो उदाहरण बताइये।	
4	किस खनिज को काला सोना कहते है?	
5	जल संरक्षण के दो उपाय बताइये।	
6	मृदा क्षरण को रोकने के दो उपाय बताइये।	
7	भारत की 70% बिजली किससे मिलती है	
8	अक्षय ऊर्जा के कोई एक उदाहरण बताइये।	
9	खनिज संसाधन किस प्रकार का संसाधन है?	
10	सर्वाधिक वन क्षेत्रफल वाला राज्य कौन–सा है?	
11	नरोरा परमाणु शक्ति केन्द्र किस राज्य में स्थित है?	
12	भारत की सबसे लम्बी नदी का नाम क्या है?	
13	भारत की प्रथम जलविद्युत परियोजना कौन–सी है व किस नदी पर है?	
14	वन महोत्सव सप्ताह कब मनाया जाता है?	
15	पवन ऊर्जा में अग्रणी राज्य कौन–सा है?	

LOs – SST823 – अंतरिम सरकार की स्थापना से लेकर भारतीय संविधान के निर्माण की विभिन्न प्रक्रियाओं को क्रमबद्ध रूप में जानता है।

नागरिक शास्त्र – कक्षा 8 – संबंधित अध्याय – भारतीय गणतंत्र की स्थापना

गतिविधि 1

वाइसराय हाउस, नई दिल्ली में काउंसिल रूप से बाहर सरकारी अधिकारी शपथ ग्रहण समारोह में कुछ ही समय पहले लिये गये इस तस्वीर में अंतरिम सरकार के सदस्यों के नाम (बाएं से दाएं) क्रम से लिखिए।

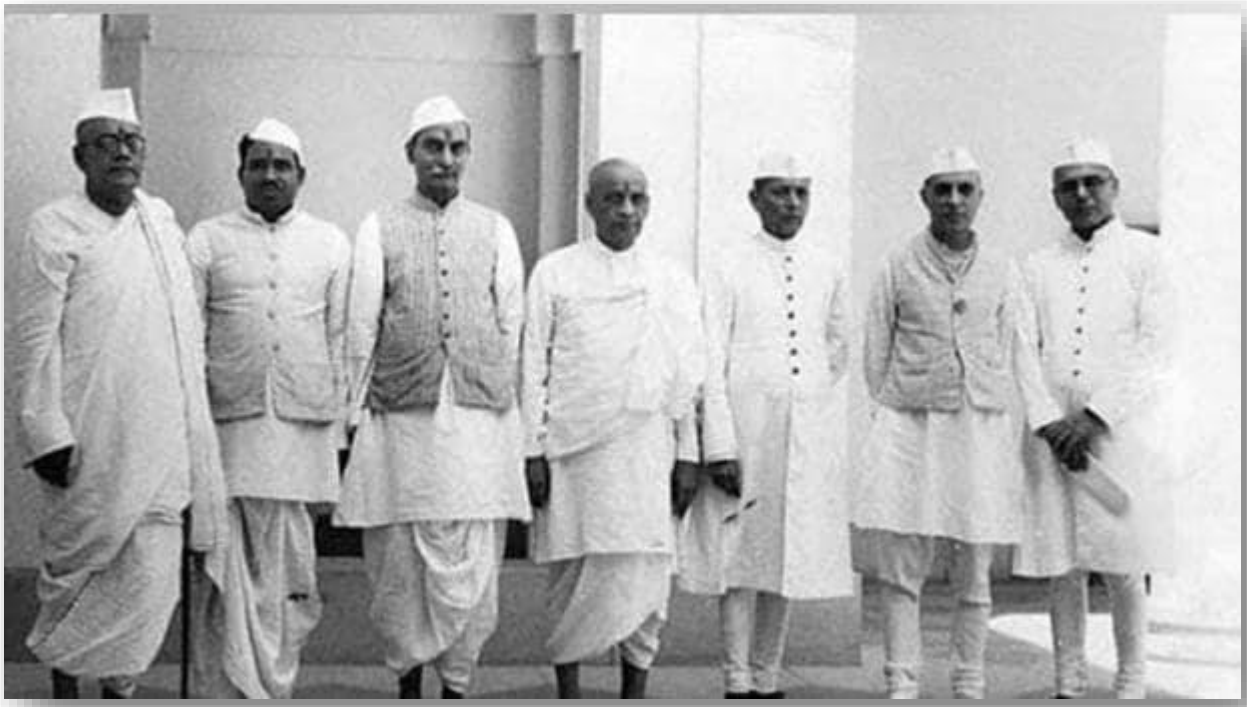

1 2 3 4 5 6 7

विशेषता	नाम	क्रम संख्या
बच्चे जिन्हें चाचा के नाम से जानते है –		
लौह पुरूष के नाम से जाने जाते है –		
देश के प्रथम राष्ट्रपति –		
देश के प्रथम महिला लोकसभा स्पीकर के पिता, जिन्हें बाबूजी के नाम से जाना जाता है –		

गतिविधि 2

दिए गए शब्दों से भारत के संविधान की उद्‌देशिका को पूर्ण करो –

(अवसर की समता, पंथ–निरपेक्ष, सामाजिक, अंगीकृत, बंधुता बढ़ाने के लिए, अखंडता, राष्ट्र की एकता, उपासना की स्वतंत्रता, अधिनियमित, संपूर्ण प्रभुत्व–संपन्न, अभिव्यक्ति, राजनैतिक)

भारत का संविधान
उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक ....., समाजवादी, ..., लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को

....., आर्थिक और ..... न्याय,
विचार, ..., विश्वास, धर्म,
और .....,
प्रतिष्ठा और .....
प्राप्त कराने के लिए
तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और
..... और .....
सुनिश्चित करनेवाली .....

दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी को एतद् द्वारा इस संविधान को ....., ...और आत्मार्पित करते हैं।

गतिविधि 3

दिए गए वाक्यों को पढ़कर यथास्थान जूनागढ़ विलय, हैदराबाद विलय, कश्मीर विलय में भरिए–

1. रियासत के राजा हरिसिंह स्वतंत्र रहने का निर्णय लिया।
2. निजाम पाकिस्तान के बहकावे में आकर स्वतंत्र रहना चाहता था।
3. हरिसिंह ने भारत में विलय के समझौते पर हस्ताक्षर किये।
4. सौराष्ट्र की छोटी सी रियासत।
5. जनता भारत में शामिल होना चाहती थी।
6. वहाँ की जनता शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में भारत में विलय की।
7. भारतीय सैनिकों द्वारा निजाम के विरूद्ध कार्यवाही शुरू की गई।
8. नवाब पाकिस्तान में शामिल होना चाहता था।
9. फरवरी, 1948 ई. में विलय हुआ।

जूनागढ़ का विलय	हैदराबाद का विलय	कश्मीर का विलय

LOs – SST808 – ऐसे कारकों को विश्लेषण करते है जिनके कारण कुछ देश प्रमुख फसलों जैसे–गेहूं, चावल, कपास, जूट इत्यादि का उत्पादन करते हैं। बच्चे इन देशों को विश्व के मानचित्र में अंकित करते हैं।

भूगोल – कक्षा 8 – संबंधित अध्याय 8 – कृषि

गतिविधि 1

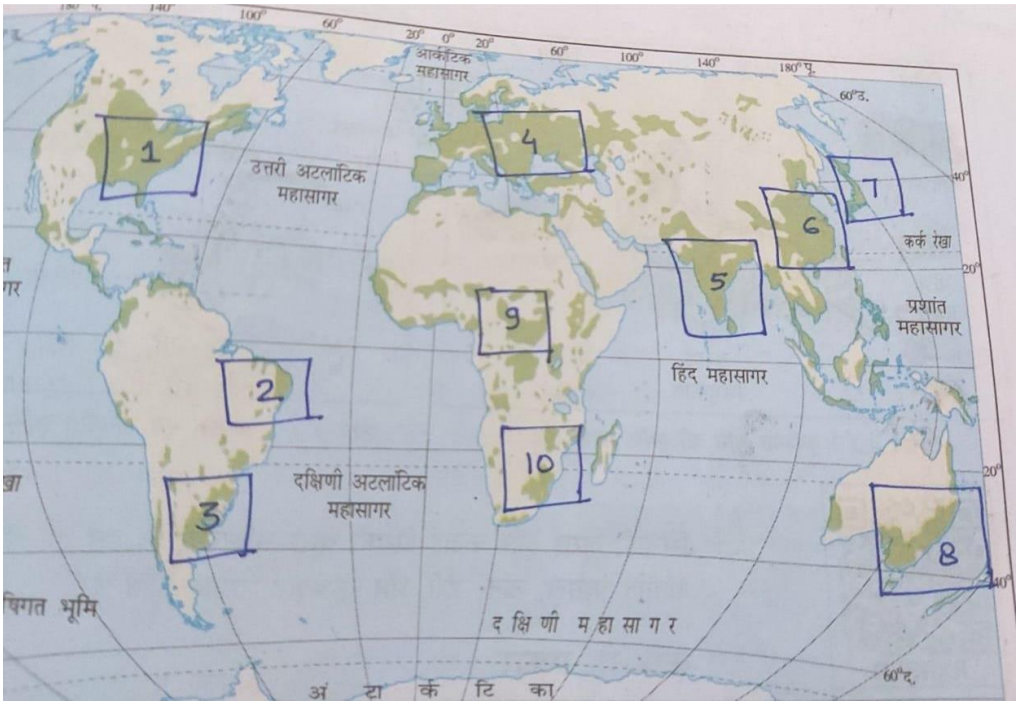

- दिये गये मानचित्र में कृषिगत भूमि का विश्व वितरण दर्शाया गया है:–
- मानचित्र पर चौकोर घेरे मे लिखे गये अंकों को देखकर नीचे दिये गये कॉलम को पूर्ण करें।

मानचित्र पर दिया गया क्रमांक	महाद्वीप/देश का नाम	प्रमुख फसलों के नाम	कृषि के प्रकार	फसलों के लिए आवश्यक तापमान	आवश्यक वर्षा अधिक/मध्यम/न्यून	मृदा

उपरोक्त प्रारूप का विश्लेषण कर कृषि कार्य पर रिपोर्ट अपने शब्दों में तैयार करें।

गतिविधि 2

पाठ के आधार पर निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए उचित शब्द लिखें :–

1. सुनहरा रेशा =
2. मोटा अनाज =
3. गेहूँ की फसल =
4. कृषक परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु की जाने वाली कृषि =
5. फसल की कटाई =
6. कृषि योग्य स्थान =
7. कृषि व्यवसाय की क्रिया =
8. चावल उत्पादक देश =
9. मक्का / ज्वार / बाजरा =
10. किसी भी प्रकार की खेती के लिए वर्षा व मिट्टी के साथ अन्य आवश्यक तत्व है। =
11. सिंचाई के लिए बनाई जाती है। =
12. भोजन चारें की फसल एवं पशुधन पालन के लिए भूमि का उपयोग

गतिविधि 3

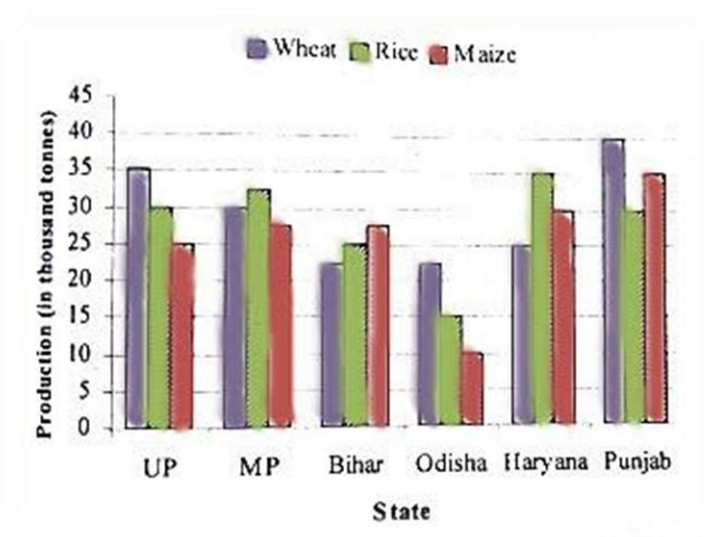

दिए गए दंड आरेख के अनुसार गेहूँ, चाँवल और मक्का के उत्पादित राज्यों को भारत के मानचित्र में अंकित करें।

LOs - SST821 - 1870 के दशक से आजादी तक में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की रूपरेखा बताता है।

गतिविधि 1

दी गई तालिका के चित्र पहचानकर नाम लिखो तथा इनसे संबंधित विशेषता लिखो।

चित्र	नाम	विशेषता
	गोपाल कृष्ण गोखले	नरम दल के नेता

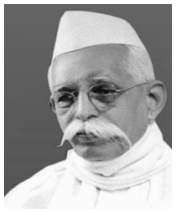		

गतिविधि 2

तालिका में दिए गए कथन/वाक्य को सुधार कर लिखो –

कथन/वाक्य	कथन/वाक्य का सही रूप	यह कथन/वाक्य किसका है?
जन्म सिद्ध अधिकार है इसे हम लेकर रहेंगे और स्वराज्य हमारा।		
मातरम् वन्दे		
खून दो तुम मुझे मै तुम्हें आजादी दूँगा		
मरो या करो		
छोड़ो अंग्रेजों भारत		

गतिविधि 3

अपने क्षेत्र के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के बारे में सचित्र जानकारी एकत्रित कीजिए।

उत्तरमाला

LOs-SST720 गतिविधि 1 का उत्तर –

2. 12, 3. नागर, 4, नयनार, 5 भोरमदेव, 6. अमीरखुसरो, 7. शिवरीनारायण, 8. निजामुद्दीन औलिया, 9. राजराजेश्वर मंदिर, 10. गंडई पंडरिया मंदिर

LOs-SST730 गतिविधि 1 का उत्तर –

सबा अंजूम 1, 5, 10, 13	डॉ. अनसुईया उइके 2, 7, 14, 15	मिनी माता 4, 9, 11, 12	तीजन बाई 3, 6, 8, 16

LOs-SST730 गतिविधि 3 का उत्तर –

कि	न	सा	रे	पा	लि	ना	जो	छि	सु	स्मि	ता	से	न	रा	ज
र	रा	ती	सु	म	र	त	म	हा	दे	वी	व	र्मा	न	स	दा
ण	म	प	धा	प	प्र	ति	भा	पा	टि	ल	लु	ने	दी	पा	दा
बे	धी	श्रे	रा	ल	क्ष्मी	बा	ई	न	प	सु	भा	ष	चं	द्र	सा
दी	म	म	म	ता	बे	न	र्जी	न्द्री	ती	अ	मृ	ता	प्री	त	ह
री	र	न	चं	मं	री	ला	छे	दी	क	ज	ना	मी	ज	रा	ब
ता	वि	जा	द्र	गे	पी	ब	ज	वा	ह	र	न	श	शि	व	फा
सा	न्द्र	क	न	श	ता	त्या	टो	पे	सा	वि	त्री	बा	ई	फू	ले
इ	ना	र	अं	क	ल्प	ना	चा	व	ला	क	व	ई	ई	प	का
ना	थ	ली	ला	र	अ	क	ब	र	मि	ना	जा	सी	न	आ	ब
ने	टै	च	इं	स	रो	जि	नी	क	सी	ता	दे	धी	रे	शा	छे
ह	गो	छ	फ	दि	ई	स	शो	ला	पी	ख	ली	क	न्द्र	मं	न्द्री
वा	र	मो	ती	दि	रा	म	ना	थ	को	विं	द	रा	मे	गे	पा
ल	क	म	ला	सा	मा	गां	धा	री	ना	जा	के	सा	ज	श	ल
क	र्ण	म	म	ल्ले	श्व	री	धी	ग	पी	टी	उ	षा	री	क	क
सु	मि	त्रा	म	हा	ज	न	रा	म	ल	क्ष्म	ण	मी	रा	र	ता

LOs-SST710 गतिविधि 3 का उत्तर –

1. 5 जून
2. जल, वायु
3. कोयला, खनिज तेल
4. पेट्रोलियम
5. 1. वृक्षारोपण 2. बांधों का निर्माण
6. 1. वृक्षारोपण 2. मल्च बनाना
7. कोयला
8. सौर ऊर्जा
9. अनवीकरणीय
10. मध्यप्रदेश
11. उत्तर प्रदेश
12. गंगा नदी
13. कर्नाटक राज्य में कावेरी
14. जुलाई के प्रथम सप्ता में
15. तमिलनाडु

LOs-SST823 गतिविधि 1 का उत्तर –

1. जवाहर लाल नेहरू – क्रमांक 6
2. सरदार वल्लभ भाई पटेल – क्रमांक 4
3. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद – क्रमांक 3
4. बाबू जगजीवन राम – क्रमांक 2

LOs-SST808 गतिविधि 2 का उत्तर –

	6 भू	1 ख	री	फ
	2 मि 9	ट्टी		7 प्रा
10 ता	ले	12 फ	8 ची	थ
3 प	ट	स	11 न	मि
मा		ल	ह	क
न		4 ज्वा	5 र	बी

संदर्भ सूची

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005
- राज्य शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद छ.ग. की वेबसाइट
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद की वेबसाइट
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

परिशिष्ट

अधिगम संप्राप्ति प्रतिफल – कक्षा 6

SST601	तारों, ग्रहों, उपग्रहों जैसे सूर्य, पृथ्वी तथा चन्द्रमा में अंतर करते हैं
SST602	पृथ्वी को एक विशिष्ट खगोलीय पिंड के रूप में समझते हैं क्योंकि पृथ्वी के विभिन्न भागों विशेष रूप से जैवमंडल में जीवन पाया जाता है।
SST603	दिन और रात तथा ऋतुओं की समझ प्रदर्शित करते हैं
SST604	समतल सतह पर दिशाएँ अंकित करते हैं तथा विश्व के मानचित्र पर महाद्वीपों और महासागरों को चिह्नित करते हैं।
SST605	अक्षांशों और देशांतरो, जैसे – ध्रुवों, विषुवत्, वृत्त, कर्क व मकर रेखाओं, भारत के राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों अन्य पड़ोसी देशों को ग्लोब एवं विश्व के मानचित्र पर पहचानते हैं।
SST606	भारत के मानचित्र पर भौतिक स्वरूपों, जैसे – पर्वतों, पठारों, मैदानों, नदियों, मरुस्थल इत्यादि को अंकित करते हैं।
SST607	अपने आस-पड़ोस का मानचित्र बनाते हैं और उस पर मापक, दिशाएँ तथा अन्य विशषेताओं को रूढ़ चिह्नों की सहायता से दिखाते हैं।
SST608	ग्रहण से संबंधित अधंविश्वासों को तर्कपूर्ण रूप से परखते हैं
SST609	बच्चे विभिन्न प्रकार के स्रोतों (पुरातात्विक, साहित्यिक आदि) को पहचानते हैं और इस अवधि के इतिहास के पुनर्निर्माण में उनके उपयोग का वर्णन करते हैं।
SST610	महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पुरास्थलों तथा अन्य स्थानों को भारत के एक रूपरेखा मानचित्र पर अंकित करते हैं।
SST611	प्रारंभिक मानव संस्कृतियों की विशिष्ट विशषेताओं को पहचान पाते हैं और उनके विकास के बारे में बात करते हैं।
SST612	महत्वपूर्ण साम्राज्यों, राजवंशों के विशिष्ट योगदानों को उदाहरणों के साथ सूचीबद्ध करते हैं, जैसे – अशोक के शिलालेख, गुप्त सिक्के , पल्लवों द्वारा निर्मित रथ मंदिर आदि।
SST613	प्राचीन काल के दौरान हुए व्यापक बदलावों की व्याख्या करते हैं। उदाहरण के लिए, शिकार-संग्रहण की अवस्था , कृषि की शुरुआत, सिंधु नदी कि नारे के आरंभिक शहर आदि और एक स्थान पर हुए बदलावों को दूसरे स्थान पर हुए बदलावों के साथ जोड़कर देखते हैं।
SST614	उस समय की साहित्यिक रचनाओं में वर्णित मुद्दों, घटनाओं, व्यक्तित्वों का वर्णन करते हैं।
SST615	धर्म, कला, वास्तुकला आदि के क्षेत्र में भारत का बाहर के क्षेत्रों के साथ संपर्क और उस संपर्क के प्रभावों के बारे में बताते हैं।
SST616	संस्कृति और विज्ञान के क्षेत्र में जैसे – खगोल विज्ञान, चिकित्सा, गणित और धातुओं का ज्ञान आदि में भारत के महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करते हैं।
SST617	विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं से संबंधित जानकारी का समन्वय करते हैं।
SST618	प्राचीन काल के विभिन्न धर्मों और विचारों के मूल तत्वों और मूल्यों का विश्लेषण करते हैं।
SST619	अपने आस-पास की मानवीय विविधताओं के विभिन्न रूपों का वर्णन करते हैं।
SST620	अपने आस-पास मानवीय विविधताओं के प्रति स्वस्थ दृष्टि कोण विकसित करते हैं।
SST621	विभिन्न प्रकार के भेद-भाव को पहचानते हैं और उनकी प्रकृति एवं स्रोत को समझते हैं।
SST622	समानता और असमानता के विभिन्न रूपों में भेद करते हैं और उनके प्रति स्वस्थ भाव रखते हैं।
SST623	सरकार की भूमिका का वर्णन करते हैं ,विशेषकर स्थानीय स्तर पर।
SST624	सरकार के विभिन्न स्तरों – स्थानीय, प्रांतीय और संघीय को पहचानते हैं।
SST625	स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में ग्रामीण एवं शहरी स्थानीय शासकीय निकायों के कार्यों का वर्णन करते हैं।
SST626	ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में चल रहे विभिन्न रोज़गारों की उपलब्धता के कारणों का वर्णन करते हैं।

अधिगम संप्राप्ति प्रतिफल – कक्षा 7

SST701	चित्र में पृथ्वी की प्रमुख आतंरिक परतों, शैलो के प्रकार तथा वायुमंडल की परतों को पहचानते हैं।
SST702	ग्लोब अथवा विश्व के मानचित्र पर विभिन्न जलवायु प्रदेशो के वितरण तथा विस्तार को बताते हैं।
SST703	विभिन्न आपदाओं जैसे – भूकंप, बाढ़, सूखा आदि के दौरान किए जाने वाले बचाव कार्य को विस्तार से बताते हैं।
SST704	विभिन्न कारकों द्वारा निर्मित स्थलरूपों के बनने की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं।
SST705	वायुमंडल के संघटन एवं संरचना का वर्णन करते हैं।
SST706	पर्यावरण के विभिन्न घटकों तथा उनके पारस्परिक संबंधों का वर्णन करते हैं।
SST707	अपने आस-पास प्रदूषण के कारकों का विश्लेषण करते हैं तथा उन्हें कम करने के उपायों की सूची बनाते हैं।
SST708	विभिन्न जलवायु एवं स्थलरूपों में पाए जाने वाले पादपों एवं जंतुओं की विभिन्नताओं के कारणों को बताते हैं।
SST709	आपदाओं तथा विपत्ति के कारकों पर विचार व्यक्त करते हैं।
SST710	प्राकृतिक संसाधनों, जैसे – वायु जल, ऊर्जा , पादप एवं जंतुओं के संरक्षण के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं।
SST711	विश्व के विभिन्न जलवायु प्रदेशो में रहने वाले लोगों के जीवन तथा भारत के विभिन्न भागों मे रहने वाले लोगों के जीवन में अंतर्संबंध स्थापित करते हैं।
SST712	विशिष्ट क्षेत्रों के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करते हैं।
SST713	इतिहास में विभिन्न कालों का अध्ययन करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले स्रोतों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।
SST714	मध्यकाल के दौरान एक स्थान पर हुए महत्वपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को दूसरे स्थान पर होने वाले बदलावों के साथ जोड़कर देखते हैं।
SST715	लोगों की आजीविका के पैटर्न और निवास क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति के बीच संबंध का वर्णन करते हैं। उदाहरण के लिए, जनजातियों, खानाबदोशों और बंजारों की।
SST716	मध्यकाल के दौरान हुए सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों का विश्लेषण करते हैं।
SST717	विभिन्न राज्यों द्वारा सैन्य नियंत्रण हेतु अपनाए गए प्रशासनिक उपायों और रणनीतियों का विश्लेषण करते हैं, जैसे- ख़िलजी, तुगलक़, मुगल आदि।
SST718	विभिन्न शासकों की नीतियों की तलुना करते हैं।
SST719	मंदिरो, मकबरों और मस्जिदों के निर्माण में इस्तेमाल की गईं विशिष्ट शैलियों और तकनीक की विशषेताओं का उदाहरणों के साथ वर्णन करते हैं।
SST720	उन कारकों का विश्लेषण करते हैं जिससे नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों (भक्ति और सूफ़ी) का उद्भव हुआ।
SST721	भक्ति और सूफ़ी संतों के काव्य में कही बातों से मौजूदा सामाजिक व्यवस्था को समझने का प्रयास करते हैं।
SST722	लोकतंत्र में समानता का महत्व समझते हैं।
SST723	राजनीतिक समानता, आर्थिक समानता और सामाजिक समानता के बीच अंतर करते हैं।
SST724	समानता के अधिकार के संदर्भ में अपने क्षेत्र में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों की व्याख्या करते हैं।
SST725	स्थानीय सरकार और राज्य सरकार के बीच अतंर करते हैं।
SST726	विधानसभा के चुनाव की प्रक्रिया का विभिन्न चरणों में वर्णन करते हैं।
SST727	राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र के मानचित्र पर अपना निर्वाचन क्षेत्र देखते हैं और स्थानीय विधायक का नाम बताते हैं।
SST728	समाज के विभिन्न वर्गों की महिलाओं के सामने आने वाली कठिनाइयों के कारणों और परिणामों का विश्लेषण करते हैं।
SST729	भारत के अलग-अलग क्षेत्रों से आने वाली विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियाँ हासिल करने वाली महिलाओं को पहचानते हैं
SST730	विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान को उपर्युक्त उदाहरणों के साथ वर्णित करते हैं।
SST731	समाचार-पत्रों के समुचित उदाहरणों से मीडिया के कामकाज की व्याख्या करते हैं।
SST732	विज्ञापन बनाते हैं।
SST733	विभिन्न प्रकार के बाज़ारों में अंतर बताते हैं।
SST734	विभिन्न बाज़ारों से होकर वस्तुएँ कैसे दूसरी जगहों पर पहुचँती है – यह पता लगाते हैं।

अधिगम संप्राप्ति प्रतिफल – कक्षा 8

SST801	कच्चे माल, आकार तथा स्वामित्व के आधार पर विभिन्न प्रकार के उद्योगों को वर्गीकृत करते हैं।
SST802	अपने क्षेत्र/राज्य की प्रमुख फसलों, कृषि के प्रकारों तथा कृषि पद्धतियों का वर्णन करते हैं।
SST803	विश्व के मानचित्र पर जनसंख्या के असमान वितरण के कारणों की व्याख्या करते हैं।
SST804	वनों की आग (दावानल), भूस्खलन , औद्योगिक आपदाओं के कारणों और उनके जोखिम को कम करने के उपायों का वर्णन करते हैं।
SST805	महत्वपूर्ण खनिजों, जैसे – कोयला तथा खनिज तेल के वितरण को विश्व के मानचित्र पर अंकित करते हैं।
SST806	पृथ्वी पर प्राकृतिक तथा मानव निर्मित संसाधनों के असमान वितरण का विश्लेषण करते हैं।
SST807	सभी क्षेत्रों में विकास को बनाए रखने के लिए प्राकृतिक संसाधनों, जैसे – जल, मृदा , वन इत्यादि के विवेकपूर्ण उपयोग के संबंध को तर्क पूर्ण ढंग से प्रस्तुत करते हैं।
SST808	ऐसे कारकों का विश्लेषण करते हैं जिनके कारण कुछ दशे प्रमुख फसलों, जैसे – गेहूँ, चावल, कपास, जूट इत्यादि का उत्पादन करते हैं। बच्चे इन देशों को विश्व के मानचित्र पर अंकित करते हैं।
SST809	विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि के प्रकारों तथा विकास में संबंध स्थापित करते हैं।
SST810	विभिन्न देशों/भारत/राज्यों की जनसंख्या को दडं आरेख (बार डायग्राम) द्वारा प्रदर्शित करते हैं।
SST811	स्रोतों के इस्तेमाल, भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों के लिए प्रयुक्त नामावली और व्यापक बदलावों के आधार पर 'आधुनिक काल' का 'मध्यकाल' और 'प्राचीनकाल' से अंतर करते हैं।
SST812	इंग्लिश ईस्ट इडिया कंपनी कैसे सबसे प्रभावशाली शक्ति बन गई बताते हैं।
SST813	दशे के विभिन्न क्षेत्रों में औपनिवेशिक कृषि नीतियों के प्रभाव में अंतर बताते हैं, जैसे – 'नील विद्रोह'।
SST814	19वीं शताब्दी में विभिन्न आदिवासी समाज के रूपों और पर्यावरण के साथ उनके संबंधों का वर्णन करते हैं।
SST815	आदिवासी समुदायों के प्रति औपनिवेशिक प्रशासन की नीतियों की व्याख्या करते हैं।
SST816	1857 के विद्रोह की शुरुआत, प्रकृति और फैलाव और इससे मिले सबक का वर्णन करते हैं।
SST817	औपनिवेशिक काल के दौरान पहले से मौजूद शहरी केंद्रों और हस्तशिल्प उद्योगों के पतन और नए शहरी केंद्रों और उद्योगों के विकास का विश्लेषण करते हैं।
SST818	भारत में नई शिक्षा प्रणाली के संस्थानीकरण के बारे में बताते हैं।
SST819	जाति, महिला, विधवा पुनर्विवाह, बाल विवाह, सामाजिक सुधार से जुड़े मुद्दों और इन मुद्दों पर औपनिवेशिक प्रशासन के कानूनों और नीतियों का विश्लेषण करते हैं।
SST820	कला के क्षेत्र में आधुनिक काल के दौरान हुई प्रमखु घटनाओं की रूपरेखा तैयार करते हैं।
SST821	1870 के दशक से लेकर आज़ादी तक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की रूपरेखा तैयार करते हैं।
SST822	राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण बदलावों का विश्लेषण करते हैं।
SST823	भारत के संविधान के संदर्भ में अपने क्षेत्र में सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों का विश्लेषण करते हैं।
SST824	मौलिक अधिकार और मौलिक कर्तव्यों को समुचित उदाहरणों से स्पष्ट करते हैं।
SST825	मौलिक अधिकारों की अपनी समझ से किसी दी गई स्थिति , जैसे – बाल अधिकार के उल्लंघन, संरक्षण और प्रोत्साहन की स्थिति को समझते हैं।
SST826	राज्य सरकार और केंद्र सरकार के बीच अंतर करते हैं।
SST827	लोकसभा के चुनाव की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं।
SST828	राज्य/ संघ शासित प्रदेश के संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के मानचित्र पर अपना निर्वाचन क्षेत्र पहचान सकते हैं और स्थानीय सांसद का नाम जानते हैं।
SST829	कानून बनाने की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं (उदाहरणार्थ , घरेलू हिंसा से स्त्रियों का बचाव अधिनियम, सूचना का अधिकार अधिनियम , शिक्षा का अधिकार अधिनियम)।
SST830	भारत में न्यायिक प्रणाली की कार्यविधि का कुछ प्रमुख मामलों का उदाहरण देकर वर्णन करते हैं।
SST831	एक प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफ.आई.आर.) दर्ज़ करने की प्रक्रिया को प्रदर्शित करते हैं।
SST832	अपने क्षेत्र के सुविधा वंचित वर्गों की उपेक्षा के कारणों और परिणामों का विश्लेषण करते हैं।
SST833	पानी, सफ़ाई, सड़क, बिजली, आदि जन-सुविधाएँ उपलब्ध कराने में सरकार की भूमिका की पहचान करते हैं।
SST834	आर्थिक गतिविधियों के नियमन में सरकार की भूमिका का वर्णन करते हैं।

TDM – SST – Class 6

		Competency Lever योग्यता विस्तार				Content प्रसंग/संदर्भ				Response Type अनुक्रिया प्रकार		Type of Questions प्रश्नों के प्रकार			
	Lo tagged	I	II	III	IV					Selected	Constucted	VSA-1 Marks	SA-2 Marks	LA-3 Marks	VLA-5 Marks
History (Q-05) Marks- 12 (-30%)	613, 618, 610, 612 618	01	02	01	01					02	03	02	01	01	01
Civics(Q.05) Marks -11- (27.50%)	623,619, 624, 625 ,623	01	02	01	01					01	04	01	02	02	00
Geography(Q.07) Marks- 17- (42.50)	602, 602, ,605 607, 601, 603, 604	02	01	02	02					02	05	02	02	02	01
Total Qs-17		04	05	04	04					**5**	**12**	**5**	**5**	**5**	**2**
Total Marks		07	13	09	11										
Question Wise %		23. 53	29.41	23.53	23.53										
Marks Wise %		17.50	32.50	22.50	27.50										

TDM – SST – Class 7

		Competency Lever योग्यता विस्तार				Content प्रसंग/संदर्भ				Response Type अनुक्रिया प्रकार		Type of Questions प्रश्नों के प्रकार			
	Lo tagged	I	II	III	IV					Selected	Constructed	VSA 1Marks	SA 2Mars	LA3M arks	VL5 Mars
History (Q. 06) Marks 15	716,716, 717, 718 716, 718	01	03	01	01					02	04	02	01	02	01
Civics(Q.05) Marks 11	734, 727 734, 726 715	01	02	01	01					01	04	01	02	02	00
Geography(Q.06) Marks 14	701, 705 701, 708 704 ,705	02	01	01	02					02	04	02	02	01	01
Total Qs		04	06	03	04					**5**	**12**	**5**	**5**	**5**	**2**
Total Marks		07	13	09	11										
Question Wise %		23.52	35.29	17.64	23.52										
Marks Wise %		17.50	32.50	22.50	27.50										

TDM – SST – Class 8

		Competency Lever योग्यता विस्तार				Content प्रसंग/संदर्भ				Response Type अनुक्रिया प्रकार		Type of Questions प्रश्नों के प्रकार			
	Lo tagged	I	II	III	IV					Selected	Constructed	VSA 1 Marks	2 Marks	LA 3 Marks	VLA 5 Marks
History (Q06) Marks 15	813, 819 (03), 812, 817	00	02	02	01					02	04	02	01	02	01
Civics (Q.05) Marks 11	826, 825 (02) 831 ,823	01	02	01	01					01	04	01	02	02	00
Geography (Q.06) Mark14	805,808, 807 (03) 809	03	01	01	01					02	04	02	02	01	01
Total Qs		04	05	04	04					**5**	**12**	**5**	**5**	**5**	**2**
Total Marks		07	13	09	11										
Que.Wise %		23.52	35.29	17.64	23.52										
Marks Wise %		17.50	32.50	22.50	27.50										

बढ़ते कदम
आकलन से शैक्षिक गुणवत्ता की ओर...

समरूपता, वैधता, विश्वसनीयता

एस. एल. ए. आंकड़ों में

43,824 स्कूल
कक्षा – 1 से 8
विषय – समस्त
28,93,738 विद्यार्थी
उत्तर पुस्तिका – 1.41 करोड़

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद छत्तीसगढ़